ज्ञान पहेलियां
मुकेश 'नादान'
निरुपमा

ज्ञान पहेलियां

मुकेश 'नादान'
निरुपमा

एम एन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
नयी दिल्ली

ISBN 81 7900 007 9

प्रकाशक
एम एन पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स
W 112 ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-110048

सस्करण 2002

मूल्य 125 00 रुपए
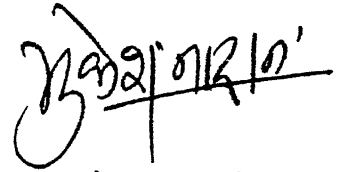
मुद्रक बी के ऑफसेट
नवीन शाहदरा दिल्ली-110032

...अपनी बात

प्यारे बच्चो।

पहेलिया ज्ञान को बढाने का एक सरल साधन है। पहेलिया हमारे ज्ञान को ही नही बढाती अपितु हमे मनोरजन भी कराती है। स्कूल मे, दोस्तो मे, पिकनिक पर अथवा छोटी-छोटी पार्टियो मे ये पहेलियाँ ज्ञान को बढाने अथवा समय काटने का सबसे अच्छा साधन होती है। इनसे एक प्रकार की दिमागी कसरत भी होती है। बच्चो के ज्ञान के साथ-साथ उनका स्वस्थ मनोरजन भी हो इसलिए हमने इस पुस्तक मे कई मनोरजक पहेलियो को सकलित किया है। सुन्दर चित्रो एव सरल भाषा मे प्रस्तुत की गई ये पहेलिया अवश्य ही आपके ज्ञान एव मनोरजन मे सहायक सिद्ध होगी।

(लेखक एव चित्रकार)

नादान फीचर्स
कलालान स्ट्रीट, नजीबाबाद
246 763 (उ०प्र०)

1

रात को नभ मे चमका करता जैसे चॉदी की इक थाली
चोर उच्क्के लूट न पावे लौटे हरदम खाली

2

तीन अक्षर का नाम सुहाना काम सदा खिलकर मुस्काना
बीच कटे तो कल कहलाऊॅ अत कटे तो कम हो जाऊॅ

3

जो जाकर न वापस आये जाता भी वह नजर न आये
सारे जग मे उसकी चर्चा वह तो अति बलवान कहाये

4

राजा के राज्य मे नही माली के बाग मे नही
फोड़ो तो गुठली भी नही खाओ तो स्वाद नही

5

धूप लगे पैदा हो जाये छॉह लगे मर जाये
करे परिश्रम तो भी उपजे हवा लगे मर जाये

6

एक बाग मे फूल अनेक उन फूलो का राजा एक
बगिया मे जब राजा आये बगिया मे चॉदनी छा जाए

7

काली-काली साडी पहने मुखडा जिसका गोरा
लडकी नही न ही गोरी रोज लगाती हूॅ मै फेरा

8

जाडो मे जब गिरता हूॅ मै छा जाता है घोर अॅधेरा
प्रथम हटे तो हरा कहाऊॅ बीच हटे तो समझो कोरा

9

ओर छोर न मेरा कोई प्रथम हटे तो समझो काश
अत कटे मालिक बन जाऊॅ मध्य कटे तो आश

10

सूखी सडी पडी लकडी मे वर्षा जल मे जो उग आये
उसको क्या कहते है भाई जो अपने सिर छत्र लगाये

11

काला कलूटा मेरा रूप अच्छी लगती कभी न धूप
दिन ढलने पर मै आ जाता सारे जग पर मै छा जाता

12

तीन अक्षर का मेरा नाम पानी देना मेरा काम
प्रथम कटे तो दल बन जाऊॅ मध्य कटे तो बाल कहाऊॅ

13

गर्मी मे जिससे घबराते जाडे मे हम उसको खाते
उससे है हर चीज चमकती दुनिया भी है खूब दमकती

14

खुली रात मे पैदा होती हरी घास पर सोती हूँ
मोती जैसी मूरत मेरी बादल की मै पोती हूँ

15

छिलका न डठल सफेद कली होय
खाए सारी दुनिया कही न पैदा होय

16

चार गरम चार नरम चार बालूशाही
जो बालक मेरी कहानी बताए वही पाए मिठाई

17

कपड़े उतरवाएँ पखा चलवाए कहती ठडा पीने को
अभी-अभी तो नहा के आया फिर से कहती नहाने को

18

एक सुबह एक शाम को आए अधकार को दूर भगाए
दुनिया देखे खुश हो जाए इनके बिना न रौनक आए

7

काली-काली साडी पहने मुखडा जिसका गोरा
लडकी नही न ही गोरी रोज लगाती हूँ मै फेरा

8

जाडो मे जब गिरता हूँ मै छा जाता है घोर अँधेरा
प्रथम हटे तो हरा कहाऊँ बीच हटे तो समझो कोरा

9

ओर छोर न मेरा कोई प्रथम हटे तो समझो काश
अत कटे मालिक बन जाऊँ मध्य कटे तो आश

10

सूखी सडी पडी लकडी मे वर्षा जल मे जो उग आये
उसको क्या कहते है भाई जो अपने सिर छत्र लगाये

11

काला कलूटा मेरा रूप अच्छी लगती कभी न धूप
दिन ढलने पर मै आ जाता सारे जग पर मै छा जाता

12

तीन अक्षर का मेरा नाम पानी देना मेरा काम
प्रथम कटे तो दल बन जाऊँ मध्य कटे तो बाल कहाऊँ

13

गर्मी मे जिससे घबराते जाडे मे हम उसको खाते
उससे है हर चीज चमकती दुनिया भी है खूब दमकती

14

खुली रात मे पैदा होती हरी घास पर सोती हूँ
मोती जैसी मूरत मेरी बादल की मै पोती हूँ

15

छिलका न डठल सफेद कली होय
खाए सारी दुनिया कही न पैदा होय

16

चार गरम चार नरम चार बालूशाही
जो बालक मेरी कहानी बताए वही पाए मिठाई

17

कपड़े उतरवाएँ पखा चलवाए कहती ठडा पीने को
अभी-अभी तो नहा के आया फिर से कहती नहाने को

18

एक सुबह एक शाम को आए अधकार को दूर भगाए
दुनिया देखे खुश हो जाए इनके बिना न रौनक आए

7

काली-काली साडी पहने मुखडा जिसका गोरा
लडकी नही न ही गोरी रोज लगाती हूँ मै फेरा

8

जाडो मे जब गिरता हूँ मै छा जाता है घोर अँधेरा
प्रथम हटे तो हरा कहाऊँ बीच हटे तो समझो कोरा

9

ओर छोर न मेरा कोई प्रथम हटे तो समझो काश
अत कटे मालिक बन जाऊँ मध्य कटे तो आश

10

सूखी सड़ी पडी लकडी मे वर्षा जल मे जो उग आये
उसको क्या कहते है भाई जो अपने सिर छत्र लगाये

11

काला कलूटा मेरा रूप अच्छी लगती कभी न धूप
दिन ढलने पर मै आ जाता सारे जग पर मै छा जाता

12

तीन अक्षर का मेरा नाम पानी देना मेरा काम
प्रथम कटे तो दल बन जाऊँ मध्य कटे तो बाल कहाऊँ

13

गर्मी मे जिससे घबराते जाडे मे हम उसको खाते
उससे है हर चीज चमकती दुनिया भी है खूब दमकती

14

खुली रात मे पैदा होती हरी घास पर सोती हूँ
मोती जैसी मूरत मेरी बादल की मै पोती हूँ

15

छिलका न डठल सफेद कली होय
खाए सारी दुनिया कही न पैदा होय

16

चार गरम चार नरम चार बालूशाही
जो बालक मेरी कहानी बताए वही पाए मिठाई

17

कपडे उतरवाएँ पखा चलवाए कहती ठडा पीने को
अभी-अभी तो नहा के आया फिर से कहती नहाने को

18

एक सुबह एक शाम को आए अधकार को दूर भगाए
दुनिया देखे खुश हो जाए इनके बिना न रौनक आए

31

एक बगिया मे दो बनजारे, हम सबको वह बहुत ही प्यारे
जैसे ऑखो के दो तारे, आसमान के वासी जैसे तारे

32

बनी रहे वह सबकी साथी, चाहे मनुष्य हो चाहे हाथी
कभी सवा गज कभी हो पौन, बतलाओ है वह कौन

33

खाती है न पीती है, उजाले के साथ हमारे रहती है
छाया और अॅधेरे मे, यह मर जाया करती है

34

पानी मेरा बाप, पानी ही मेरा बेटा
मुॅह ऊपर करके देखो, मै सबके ऊपर लेटा

35

है इसका पानी का चोला, लगता आलू को गोला
उल्टा कर यदि इसको पाओ, लाओ-लाओ कहते जाओ

36

प्रथम कटे या मध्य कटे, यह तो रहता हरदम गन
नीले रग की इस काया को, नाप न पाएॅ इसको हम

37

जिसके पास न पत्ता है, न जड और न फूल
हरदम हरी रहती और बढती, रहती दूजो के सिर झूल

38

अन्त कटे तो थोडा होता, मध्य कटे तो होता कल
प्रथम कटे तो मल हो जाता, उसका है जीवन मे जल

39

एक नारी का मैला रग, लगी रहे वह पी के सग
उजियारे मे पी सग रहती, अँधेरे मे गायब हो जाती

40

प्रथम कटे तो बनती कड़ी, मध्य कटे तो रहती झड़ी
जगल मे वह पैदा होती, घुन लग जाये मैदा होती

41

एक फल के चौबीस फॉके, रग श्वेत और श्याम
आगे-पीछे दोनो आते, नर-नारी है नाम

42

हठी और गुस्सैल बचपना, भरी जवानी रोये
देर से आये जल्दी जाये, बड़ी देर तक सोये

43

हमने देखा एक बताशा, पानी मे इतराता जाता
होता है अजीब तमाशा, हवा लगे तो नजर न आता

44

हरे-भरे से बाग मे, मोती गिरे अनेक
माली गया बीनने, बाकी बचा न एक

45

पानी का-सा बुलबुला, बाजार मे बिकता नही
छीलो तो छिलता नही, खाने मे है स्वाद नही

46

खुली रात मे पैदा होती, हरी घास पर सोती हूॅ
मोती जैसी मूरत मोरी, बादल की मै पोती हूॅ

47

है बिखेर देती वसुन्धरा, मोती सबके सोने पर
रवि बटोर लेता है उनको, सदा सबेरा होने पर

48

मै सबसे कड़वा कहलाऊँ, फिर भी प्यार सभी का पाऊँ
कई रोगो का एक निदान, नाम बताए चतुर सुजान

49

एक जगह पर खडा हुआ हूँ, पर हित पथ पर अड़ा हुआ हूँ,
मेरी पूजा करते मानव, मुझे काटते अनपढ दानव

50

कभी ओढनी पूरी ओढे, कभी ओढे वह आधी
कभी खोल कर, पूरा चेहरा सूत कातती दादी

51

एक चीज है बडी अनोखी, हमने तुमने सबने देखी
जिन्दा मे से निकले मुर्दा, और मुर्दा से जिन्दा

52

एक बुढिया शैतान की खाला, बाल सफेद लेकिन मुँह काला
बच्चे पीछे-पीछे भागे, लेकिन बुढिया उनसे आगे

53

झिलमिल-झिलमिल ऐसे चमके, जैसे चमके कोई मोती
नगे पॉव चले जो उस पर, उसकी तेज रोशनी होती

54

पैदा हुई तो बीस फुट , फिर घटी फुट चार
घटकर के घटती गई, कैसी है वह नार

55

सच्चा दोस्त वही है भाई, कष्ट पडे पर तजे न साथ
खडे होकर धूप मे देखो, देगा कौन तुम्हारा साथ

56

वह नार देखने मे हरी, पर अन्दर लहू से भरी
जो कोई उसकी सगत करे, अपने हाथ लहू से भरे

57

हरी-हरी इक सुन्दर नार, सबका करती है श्रृँगार
जब कोई उसको अग लगाये, शर्म से वह लाल हो जाये

58

एक मॉ के हुये दो पूत, दोनो की अलग-अलग करतूत
भाई को भाई से लाग, एक है ठडा दूसरा आग

59

बारह शाखा पेड़ की, बावन उसके फूल
सात पखुडी फूल की, इसे न जाना भूल

60

नल कुऑ तालाब नदी मे, रहता हूॅ मै सागर मे
बहुत स्वाद लगता हूॅ, मै जब रहता हूॅ सागर मे

61

हरे रग की देखी नार, बात-बात की रखे आर
नर-नारी जो हाथ लगावे, बदन सिकोड तुरन्त कुम्हलावे

62

दिखे नही पर पहना है
नारी का यह गहना है

63

आगे पीछे साथ चले
लेकिन कभी न हाथ लगे

64

बारह घोडे तीस गरारी
तीन सौ पैसठ चढी सवारी

65

हरी पत्तियो का हुआ कमाल
लगने पर हो जाये लाल

66

सरपट दौडे हाथ न आये
घडियॉ उसका नाम बताये

67

एक अलमारी मे बारह खाने
हर खाने मे तीस है दाने

68

सूरज से नित ऑख मिलाये
और खुशी से खिल-खिल जाये

69

ऑखो मे जब बस जाती हूँ
बिस्तर पर ले आती हूँ

70

काला हाथी उडता जाए
जजीरो से न पकडा जाए

71

बेशक न हो हाथ मे हाथ
जीती है वह आपके साथ

72

तीन टॉग की स्थिर चिडिया, रोज सबेरे नहाये
दाल चावल का नाम न जाने, कच्ची रोटी खाये

73

एक अनोखा पक्षी देखा, नदी किनारे रहता है
चोच सुनहरी जगमग करती, दुम से पानी पीता है

74

एक डिबिया मे चालीस चोर, सबका मुँह है काला
पूँछ पकडकर आग लगाई, जगमग हुआ उजाला

75

भीतर चिलमन बाहर चिलमन, बीच का कलेजा धडके
अमीर खुसरो यूँ कहे, वह दो-दो अगुल सरके

76

एक पैर है काली धोती, जाडे मे है हरदम सोती
कडी धूप मे साथ निभाए, वर्षा मे है हरदम रोती

77

चौडा पेट बना है जिसका, जलती जिसमे ज्वाला
मगर और के पेटो से यह, आग बुझाने वाला

78

एक अचम्भा मैने देखा, कुएँ मे लग गई आग
कीचड पानी जल गया, मछली खेले फाग

79

मिट्टी का घोडा, लोहे की लगाम
उस पर बैठे, मियाॅ पठान

80

एक नारी के दो है बालक, दोनो का है एक ही रग
एक घूमे एक खडा रहे, रहते हरदम सग

81

एक मकान मे चालीस चोर, सबका मुॅह है काला
पूॅछ पकडकर आग लगाई, जगमग हुआ उजाला

82

नाम लिया तो रख दिया, सबने पाई चार
काम किया पैसा न दिया, लेट गये सब यार

83

चार पॉव पर चल न पाऊॅ, बिना हिलाये हिल न पाऊॅ
फिर भी सबको दूॅ आराम, आती हूॅ मै सबके काम

84

तीन हाथ और पेट है गोल, सर-सर करते मेरे बोल
गर्मी मे मै आता काम, मुझ बिन न होता आराम
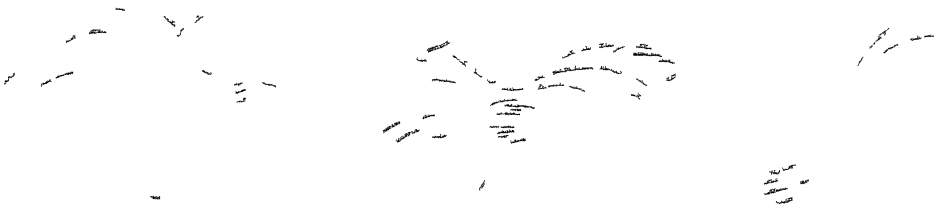
85

मेरे होते कई आकार, फिर भी होते है पैर चार
जो कोई भी आता है, मुझमे आसन पाता है

86

मिट्टी से मै जीवन पाऊँ, प्यास सभी की दूर भगाऊँ
जाडो मे करता आराम, गर्मी मे मै आता काम

87

दो हाथो का एक जानवर, फिर भी है बेजान
सारी दुनिया को समझाए, हर पल होत महान्

88

अनगिन डाली पत्ता एक, हुआ अचम्भा उसको देख
सिर पर सजे सलोना रूप, न कुम्हलाये चाहे हो धूप

89

एक औरत के पेट न आॅत, ऊपर नीचे दाॅत-ही-दाॅत
दाॅतो से ले जा निकाल, कसकर सिर पर बडे बवाल

90

जगल मे इसका मायका, गाॅव-शहर इसकी ससुराल
जब घर मे आ गई दुल्हन, उठ चला सारा बवाल

91

एक नार के पेटे मे कीली, कीली बिन हो जाये ढीली
दबा टॉग जो लेय दबाय, अनायास कटकर रह जाय

92

दो पॉव और दो ही सर, ऐसी नार रहे हर घर
जो कोई उसके बीच मे आए, कट-कट-कट-कट करता जाए

93

सोने की वह चीज है, बिके हाट बाजार
हल्की-फुल्की भी नही, कई किलो का भार
पॉव भी उसके चार है ,चलने से लाचार

94

सदा जिलाये जगत् को, एक मर्द के बडे भाग्य
रात-दिन उसके पेट मे, सुलगती रहती है आग

95

सिर पर जली पेट है खाली, पसली उसकी एक से एक निराली
सबको सिर पर है बैठाता, तभी प्यार सभी का पाता

96

सॉपो भरी एक पिटारी, सबके मुॅह मे है चिगारी
जोडो हाथ तो निकले घर से, फिर घर पर सिर दे दे पटके
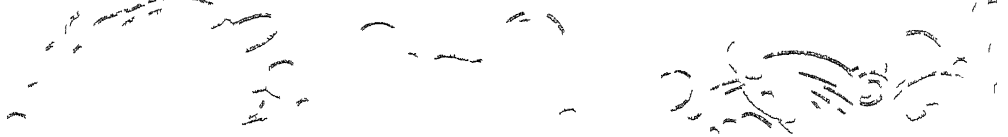
97

मुॅह पर सुलगा अगारा तो, मिला पूॅछ से पानी
उतनी ज्यादा भडकी वह तो, जितना ज्यादा पानी

98

पैर नही पर चलती है, कभी न राह बदलती है
दिन की उम्र बताती है, और उसी को खाती है

99

रोज मुझे तुम देखते हो
साल भर बाद फेकते हो

100

है तो वह रात की रानी
ऑख से उसके टपके पानी

101

काला घोडा सफेद सवारी
एक के बाद एक की बारी

102

काम उमेठो गाता कौन
तुम्हारा मन बहलाता कौन

103

दो अँगुल की सडक
उस पर रेल चले बेधडक

104

हाथ लिए दस-दस को काटे
जब बिगडे तब पत्थर चाटे

105

कमर बॉधे कोने मे खडी
हर घर इसकी जरूरत पडी

106

पगरी मे भी गगरी मे भी, और तुम्हारी नगरी मे भी
कच्ची खाओ पक्की खाओ, सिर मे उसका तेल लगाओ

107

जा जोडो तो बने जापान, बडे बडो के मुँह की शान
बनारसी यह जाना जाता, दावतो मे रग जमाता

108

आगे-आगे बहना आई, पीछे-पीछे भइया
दॉत निकाले बाबा आए, बुरका ओढे मइया

109

हरी टोपी काला बाना, सिर पर बैठ शहर को जाना
गली मुहल्ले शोर मचाना, भुरता करके इसको खाना

110

फल नही पर फल कहाऊँ, नमक मिर्च के सग सुहाऊँ
खाने वाले की सेहत बढाऊँ, सीता मॉ की याद दिलाऊँ

111

नाम मेरा तीन अक्षर का, रहने वाला सागर तट का
खाने मे आता हूँ काम, बोलो बच्चो मेरा नाम

112

रग की हूँ मै पीली-पीली, सब ही के घर जाती हूँ
वर-कन्या और साग दाल पर, अपना रग जमाती हूँ

113

हरे-हरे ऊपरे से देखे, पक्के हो या कच्चे
भीतर लाल मलाई जैसे, ठडे मीठे लच्छे

114

डिब्बा देखा एक निराला, जिसका ढकना और न ताला
पेदा उसका और न कोना, बन्द है उसमे चॉदी-सोना

115

बाल नुचे कपडे फटे, मोती लिए उतार
यह आफत कैसी पडी, नगी कर दी नार

116

बिना आग के खीर बनाई, न मीठी न नमकीन
रत्ती-रत्ती खा गए, बडे-बडे शौकीन

117

एक फूल यहाँ खिला, एक फूल कलकत्ता
एक अचम्भा हमने देखा, पत्ते के ऊपर पत्ता

118

एक चिडिया लट्ट्, पख उसके पट्ट
उसकी चमडी दी उतार, उसका मास मजेदार

119

आर गगा पार गगा, बीच मे खजूर
पाँचो भैया लौट जाओ, हम जाए बडी दूर

120

हाय हमारा पेट फोडकर, दुनिया पानी पीती है
ऊँचे-ऊँचे लटके रहते, हमे न जीने देती है

121

मुँह पे मस्सा, पेट मे दाढी
चूस - चूसकर, पूरे-परिवार ने खाई

122

छ अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने मे काम
आधा मै फलो मे रहता, आधा है फूलो मे नाम

123

जाहिरी रग इसका काला है, बदन मे खूँ उसके निराला है
खा ले जो इसके कर सके न चूँ, एक लैला के बहुत है मजनूँ

124

देखने मे लगता डडा, उस पर देखो बँधा है झडा
उसका तन है बड़ा गठीला, खाने मे वह बड़ा रसीला

125

कभी तो यह हरी होती है, और कभी यह लाल
लेकिन इसको जो ज्यादा खा जाए, हो जाए सचमुच बेहाल

126

कॉच का महल, कचनार की कली
अमृत की बूँद, मिश्री की डली

115

बाल नुचे कपडे फटे, मोती लिए उतार
यह आफत कैमी पडी, नगी कर दी नार

116

बिना आग के खीर बनाई, न मीठी न नमकीन
रत्ती-रत्ती खा गए, बडे-बडे शौकीन

117

एक फूल यहॉ खिला, एक फूल कलकत्ता
एक अचम्भा हमने देखा, पत्ते के ऊपर पत्ता

118

एक चिडिया लट्ट, पख उसके पट्ट
उसकी चमडी दी उतार, उसका मास मजेदार

119

आर गगा पार गगा, बीच मे खजूर
पॉचो भैया लौट जाओ, हम जाए बडी दूर

120

हाय हमारा पेट फोडकर, दुनिया पानी पीती है
ऊॅचे-ऊॅचे लटके रहते, हमे न जीने देती है

121

मुॅह पे मस्सा, पेट मे दाढी
चूस - चूसकर, पूरे-परिवार ने खाई

122

छ अक्षर का मेरा नाम, आता हूॅ खाने मे काम
आधा मै फलो मे रहता, आधा है फूलो मे नाम

123

जाहिरी रग इसका काला है, बदन मे खूॅ उसके निराला है
खा ले जो इसके कर सके न चूॅ, एक लैला के बहुत है मजनूॅ

124

देखने मे लगता डडा, उस पर देखो बॅधा है झडा
उसका तन है बड़ा गठीला, खाने मे वह बड़ा रसीला

125

कभी तो यह हरी होती है, और कभी यह लाल
लेकिन इसको जो ज्यादा खा जाए, हो जाए सचमुच बेहाल

126

कॉच का महल, कचनार की कली
अमृत की बूॅद, मिश्री की डली

127

मीठा-मीटा स्वाद है मेरा, बच्चो जरा बताना
लेकिन तुम भूलकर भी, इसकी अग्रेजी नही बनाना

128

हरा मुकुट वह पहना करती, फिरती फूली-फूली
गोरा-गोरा रग है उसका, बात बडी मामूली

129

बाहर बाल है भीतर पानी, बीच मे जिसकी सुन्दर काया
जिसने पाया बडे चाव से, तोड-तोडकर खाया

130

कॉटेदार खाल के भीतर , रसगुल्ला है प्यारा
छोटे-बडे प्रेम से खाते, सभी फलो मे न्यारा

131

पीला-सा इक प्यारा घर है, उसमे रखे काले अडे
मीठा इसका स्वाद होता है, बतलाओ नही पड़ेगे डडे

132

हमने देखा ऐसा मटका, उसको जब घर लाकर पटका
हमने कुछ खाया, कुछ फेका, फिर मटके का पानी गटका

133

हरा बना है चबूतरा, भीतर लाल मकान
इधर-उधर उसमे बैठे, काले-काले पठान

134

सोन का इक महल बनाया, जिसमे हरी दीवार लगाई
बूझो जल्दी मेरे भाई, जहाँ कोयला खान है भाई

135

हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जडी थी
राजा जी के बाग मे, दुशाला ओढे खड़ी थी

136

ऊपर से यह हरा है, उन्दर से है लाल
उतना मीठा रस भरा, जितनी मोटी खाल

137

दूध का कह सकते पोता, पर है वह दही का बच्चा
उसे पकाने की नही जरूरत, लोग उसको खाते है कच्चा

138

कड़ाही मे बहती पीली नदी, उसमे तैरते पीले अडे
सोच-समझकर उत्तर बताओ, नही पडेगे डडे

139

दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम
उलट जाऊँ तो नाच दिखाऊँ, कढी पकौडे खूब खिलाऊँ

140

एक अनोखी है वह लकडी, जिसमे छिपी मिठाई
बच्चो जल्दी नाम बताओ, सब करते चुसवाई

141

पीला हरा अनोखा प्यारा, पेडो पर लगता है न्यारा
पीला गूदा काले बीज, खाने की अद्भुत है चीज

142

एक मिठाई खेत मे, खडी-खडी इठलाय
महीनो तक ताजा रहे, उत्तर देओ बतलाय

143

एक मिठाई है लगी, झाडी बीचो बीच
खाना भाई ध्यान से, खड़े सिपाही तीस

144

रग-बिरगी ठडी सुन्दर, सबके मन को भाती
घूँघट सरका कर चेहरे से, बच्चो का मन ललचाती
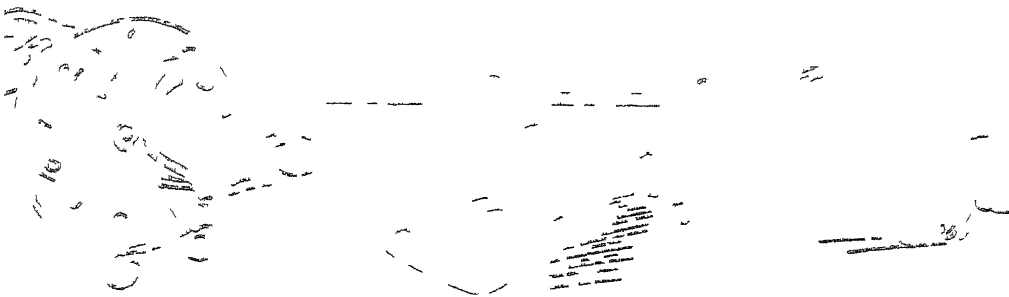
145

कौन है जो ठडी मीठी, सबको पास बुलाए
मुँह मे जाते ही वह सबके, तन-मन मे शीतलता बरसाए

146

टेढी-मेढी गली है, गली-गली मे रस
उत्तर सही बताओगे तो, रुपये पाओगे दस

147

अगर कही मुझको पा जाता, बडे प्रेम से तोता खाता
बच्चे बूढे अगर खा जाते, व्याकुल हो आँखे भर लाते

148

भीतर बाल और ऊपर चाम, बिकता है यह सरे आम
उसको खाते खास और आम, बतलाओ उनका क्या नाम

149

मै राजा बरसात का, खाएँ चूसे आप
जब कहते लँगडा मुझे, दिल जाता है काँप

150

छोटी-सी एक छोकरी, जिसका है सस्ता दाम
लाल-हरा घाघरा पहनती, मुँह मे आग लगाना काम

151

तन गोरा मुख चॉद-सा, कोई न कहता अधूरी
चाहे कोई तोड भी ले, फिर भी वह पूरी की पूरी

152

लाल फल कॉटो भरा है, खाये जग ससार
बेर-बेर मै कहता हूॅ, अब तो बूझ ले यार

153

हरा-भरा लम्बा आकार, है तरकारी कॉटेदार
कच्चा तरकारी कहलाता, पकते ही यह फल बन जाता

154

पेड पर बसे पर पक्षी नहीं, दूध देय पर गाय नही
तीन नेत्र पर शकर नही, जटा धरे पर जोगी नही

155

गोरा-गोरा प्यारा-प्यारा, दर दीवार करे उजियारा
आग लगे उसको पानी से, जा बूझो नाम ज्ञानी से

156

एक घर मे सोना रखा, चॉदी की दीवार
जाने को रास्ता नही, बाहर से ही पुकार

157

एक गेद मे रहता पानी
आधा सोना आधा चाँदी

158

हरी टोपी लाल दुशाला
पेट मे उसके मोतियो का भरा डाला

159

दो मुसाफिर चलते जाएँ
चमेली के फूल बिखरते जाएँ

160

छोटे से सूरदास
कपड़े पहने सौ पचास

161

छोटा-सा-फकीर
उसके पेट मे लकीर

162

इसमे एक अनोखी बात
मुँह कडवा पर मीठा गात

163

एक घडे मे दो रग पानी
जल्द बताओ उत्तर ज्ञानी

164

ऊपर ताशा नीचे ताशा
बीच मे लाल बताशा

165

कटोरे मे कटोरा
बेटा बाप से भी गोरा

166

सूखे पत्तो मे नग-सी जडी
सोने के रग को रस मे भरी

167

दूध मे दिया दही मे आया
पेड पर लगा सबने खाया

168

हरी डिबिया सफेद दाने
उसके भीतर काले दीवाने

169

घेरादार है लहगॉ उसका, एक टॉग से रहे खडी
करते है सब चाह उसी की, वर्षा हो या धूप कडी

170

मार हमेशा मै हूॅ खाती, लेकिन कभी नही घबराती
जितनी अधिक मार है पडती, उतना ही मै शोर मचाती

171

एक पैर की एक बालिका, लहॅगा पहने घेरेदार
काम बहुत आती है सबके, वर्षा की जब पडे फुहार

172

मेरे बीच जो आयेगा, टुकडे-टुकडे हो जायेगा
नाम जो मेरा बतलायेगा, बुद्धिमान वह कहलायेगा

173

बॉध गले मे लम्बा धागा, आसमान मे उडती हूॅ
कटती देख मुझे सब लपके, बात-बात मे कटती

174

एक नगर मे अठारह चोर, और नगर की रानी एक
वहॉ दरोगा ऐसा आया, जिसने सबको मार भगाया

175

आपस की उलझन को सुलझाकर, अलग-अलग जो बॉटता
दॉत बहुत होते है उसके, मगर नही वह काटता

176

एक टॉग पर खडी रहूँ मै, एक जगह पर अडी रहूँ मै
खडी-खडी गायब हो जाऊ, घर मे मै प्रकाश फैलाऊँ

177

दो दुबले कोल्हू के बैल, दो पडे कॉच की जेल
चक्कर बारह मील लगाये, कितु जेल से निकल न पाये

178

ओढो और बिछाओ यार, मै करती सबका सत्कार
सर काटे पर बनती दर, धड काटे हो जाती चार

179

ऑखो का श्रगार हूँ, मुझ मे अक्षर तीन
आदि कटे पर हूँ रमा, सुर हूँ अन्त विहीन

180

एक पहेली मै कहूँ , तू सुनले मेरे भ्राता
बिना पैरो वो उड गई, बॉध गले मे धागा
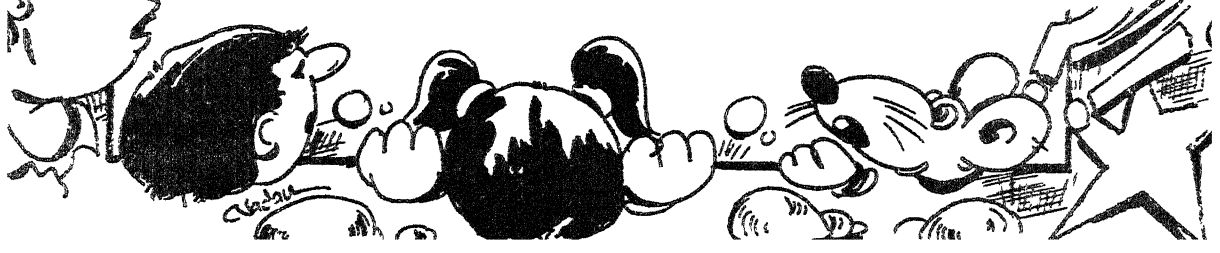
181

बिन बोले वह कह देता है, जाने कितनी बाते
बद करो तो हो जाती है, सारी दुनिया मे राते

182

मिट्टी का मै बना हुआ हूँ, दिल के नेह से घर उजलाता
मेरे घर है खुद ॲधियारा, पर सबको प्रकाश दिखाता

183

एडीसन ने कमाल दिखाया, घर-घर मे मुझको चमकाया
रात को मै दिन बना देता, ॲधेरे मे उजियाला लाता

184

रखती हूॅ मै भी दो हाथ, शिक्षित रखते अपने साथ
नही एक भी ॲगुली मेरी, देखो मुझे न होगी देरी

185

तीन अक्षर का मेरा नाम, ऑखो के मै आता काम
आदि कटे पानी बन जाता, मध्य कटे तो काल
अन्त पर कर्म हूॅ बनता, रखे लोग पलको पर डाल

186

पानी नही तेल हूॅ पीता, अन्न नही खाता हूॅ फीता
जब तक तेल तभी तक जीवन, ॲधकार को हमने है जीता
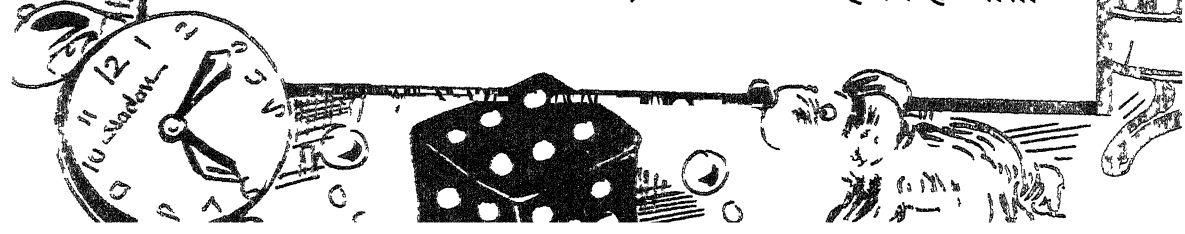
187

मुँह पर अपने रखे दो हाथ, बोला करती है दिन रात
जब हो जाती बद जबान , लोग ऐठते इसके कान

188

बरखा सर्दी धूप कडी हो, पथ मे पत्थर कील गडी हो
इन सबसे मै तुम्हे बचाऊँ, फिर भी हर दिन रगडा जाऊँ

189

निखट्टू हर दम बैठै रहते, बस चुप रहते देखा करते
जब मुँह पर चॉटे पड जाते, दोनो रोते हल्ला करते

190

एक फूल है काले रग का, सिर पर सदा सुहाता
तेज धूप वर्षा मे खिलता, छाया मे मुरझाता

191

मैने देखी वस्तु निराली, मुँह बगैर वह बोले
काटे दॉत बिन जब तब, राज कौन यह खोले

192

जलाया तो सबके मन भाया, बुझा हुआ कुछ काम न आया
मैने कह दिया उसका नाम, बोलो उत्तर बढाओ ज्ञान

193

खुली ऑख से थोडा देखो, ढकी ऑख से ज्यादा
इसकी अर्थ बताओ बच्चो, अर्थ बहुत ही है सादा

194

एक नारी मेरे मन भवे, न वह पहने न वह खावे
बुड्ढो को वह राह दिखावे, जवानो के वह हाथ न आवे

195

नाकपुर मे सीट फैले, कानपुर तक पैर
नैनपुर मे काम करता, हिले डुले बगैर

196

बीच पेट मे दो हाथ लगे, चक्कर रहते काट
पॉच-पॉच मील पर बारह, स्टेशन बनाई काट

197

छोटा सा घर तुरन्त बनाऊँ, मच्छर मक्खी दूर भगाऊँ
सुबह को जब तुम उठ जाओ, घर को बन्द करके रख जाओ

198

चार अट्टे चार बट्टे, चार सुरमेदानी
हरियल तोता उड गया, तो रह गई वीरानी

199

अन्धे इसको नही जानते, काने कुछ पहचाना करते
जिनको कम दिखलाई देता, वे इसके दीवाने होते

200

मन्दिर मे वह बास करे, उसकी लम्बी पूँछ
उल्टा मुँह नीचे को रखे, लोग हिलाते अन्दर मूँछ

201

आधा लोहा आधा लकडी, एक तरफ रखता है धार
बालो का वह तोता दुश्मन, उनका करता बेडा पार

202

गोल-गोल है काया जिसकी, बिन पैरो के चलता है
सारी दुनिया का वह प्यारा, किस्मत से ही मिलता है

203

जब माँगो तब जल भर लाता, सबकी प्यास को वह बुझाता
जो कभी इधर या उधर हो जाता, बिन पेदे का वह कहलाता

204

एक पैर है काली धोती, जाडे मे हूँ हरदम सोती
गर्मी मे हूँ छाया देती, वर्षा मे हूँ हरदम रोती

205

उसके है दो-दो मुँह, उन दोनो पर खाल चिपकाई
हाथो से जब थप्पी मारी, वही खाल जोर से चिल्लाई

206

हमने देखा एक जानवर, खाल नही पर रखता बाल
रग-बिरगे भोजन खाता, चित्रकला मे करे कमाल

207

सुबह-सुबह मै आता हूँ, जग की खबरे लाता हूँ
ताजा-ताजा ही सब पढते, शाम को मै मर जाता हूँ

208

हम उसकी सवारी करते, पर खाती न दाना घास
हवा पर ही जिन्दा रहती, लेकिन न लेती साँस

209

प्रथम कटे तो बना जल, अन्त कटे तो काज
मध्य कटे तो समय बताये, क्या है ये राज

210

न खाता है न पीता है, वह सबके घर मे रहता है
न हँसता है न रोता है, घर की रखवाली करता है
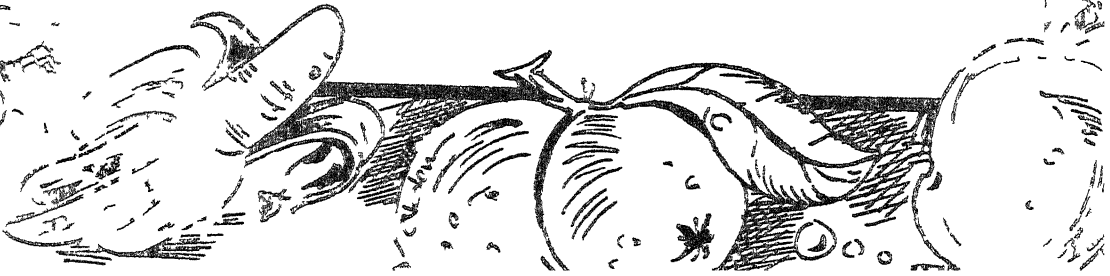
211

आये महफिल मे दो भाई, आते ही हो गई पिटाई
मुँह पर खाते खूब तमाचे, हल्ला-गुल्ला शोर मचाते

212

मारो तो वह जग जाती, बिन मारे सो जाती है
गले लटककर घूमा करती, सबको खबर कराती है

213

तीन अक्षरो का बोलो क्या हो, शुरू न हो तो वही पडा हो
बीच न हो तो बहुत कडा हो, बतलाओ जो कुछ पहना हो

214

हमने देखी वस्तु निराली, मुँह बगैर वह बोले
बिना दाँत के काटे वह, कौन राज यह खोले

215

थल पर रहता पाँव तुम्हारे, जल मे रहता वह हाथ
मुर्दा होकर भी रहता है, जिन्दो के ही साथ

216

चार आँख का मै कहलाऊँ, सबके सीने पर दिख जाऊँ
मुझ बिन वस्त्र न होते पूरे, और दिखाई पड़े अधूरे
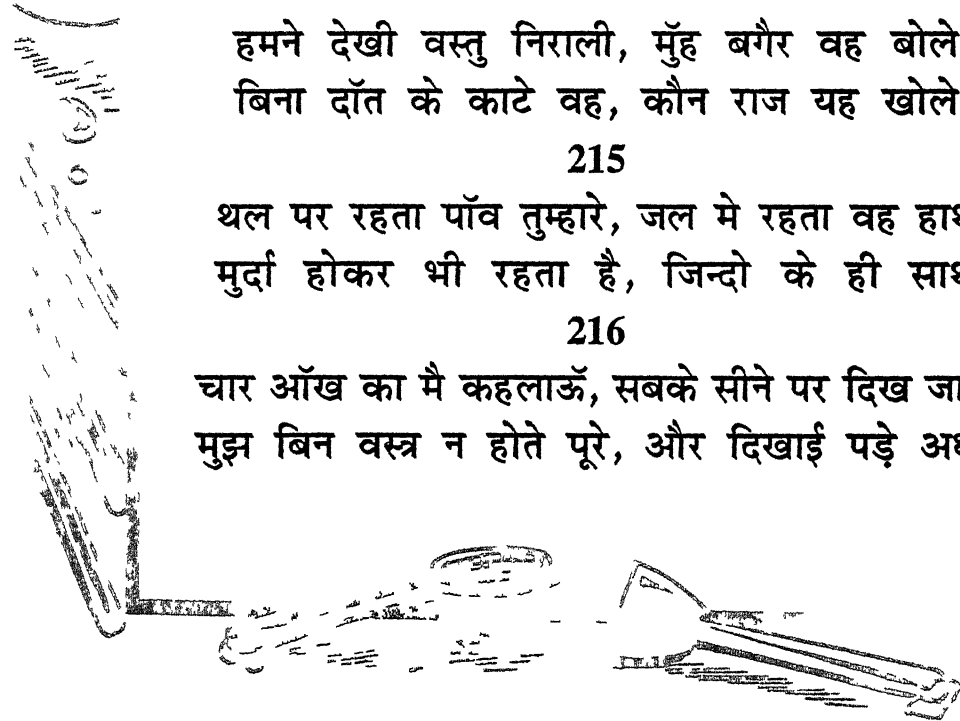
217

आगे घेरा पीछे घेरा, जजीर बॅधी है पॉवो मे
सरपट दौडा करती हूॅ, सडक शहर और गॉवो मे

218

बडे जतन से इसे बनाई, धागे-धागे गॉठ लगाई
हाथ सनम के भेजी तुमको, पहुॅची हो तो लिखो हमको

219

ताक से वह जी उठे
भर-भर मॉगे चुल्लू

220

मारे से वह जी उठे
बिन मारे मर जाये

221

पापा जीव अनोखा लाए
कान उमेठो गाना गाए

222

एक ऑख से सबको भाती
दो चिथड़ो को साथ मिलाती

223

एक मकान मे खिडकी एक

हरदम देखो फिल्म अनेक

224

गरम देश की है वह रानी,

शीश झुकाकर देती पानी

225

एक राजा की अनोखी रानी

पैरो से वह पीती पानी

226

अगर नाक पर मै चढ जाऊँ

कान पकडकर तुम्हे पढाऊँ

227

दाने-दाने गिनती जाती

दादी अम्मा रोज फिराती

228

पहले तो दिया मुँह से लगाये

फिर पीछे से आग लगाये
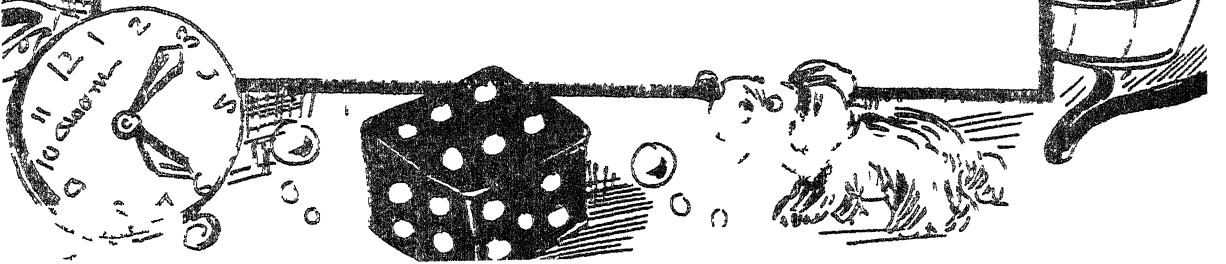
229

रखती हूँ मै इज्जत सबकी, घर-दफ्तर हो या स्कूल
सदा ऑख के आगे रहती, सभी देखना जाते भूल

230

हम दोनो है पक्के मित्र, कर लेते सब काम विचित्र
पॉच-पॉच सेवक है साथ, कभी नही वे छोडे साथ

231

बिन बोले वे कह देती है, जाने कितनी बाते
बद करो तो हो जाती है, ज्यो दुनिया मे राते

232

दो सखियॉ दोनो चचल, फिरती फाटक खोले
सो जाएँ तो सपने देखे, हसे खुशी मे दु ख मे रो ले

233

इधर कोठरी उधर कोठरी, बन्द दोनो मे एक-एक ताला
बहुत काम की चीज हूँ भाई, बोलो क्या है नाम हमारा

234

काली-काली सबके पास, कोई न उनका मोल
राजा भी जो मॉगे तो, हम कहे इन्हे अनमोल

235

एक ही शक्ल और एक ही नाम, बीच मे उनके रहता ज्ञान
बोलना न जाने सुनते पर सग, उन दोनो के बीच सुरग

236

तेरी लग गई मेरी खुल गई, उनकी हो गई चार
ये न हो तो दुनिया मे, जीना है बेकार

237

एक मछली जल मे तिरे, रहती है सबके पास
चली जाय सूझे नही, ना हड्डी ना मास

238

एक पेड के दो तने, दो शाखे दस फलियाँ
ऐसा पेड कही न देखा, खोजो सारी गलियाँ

239

दो खिड़की मे मेरा वास, हरदम रहूँ तुम्हारे पास
मुझको कोई पकड न पाता, मिनटो मे मीलो दूर दिखाता

240

श्याम बदन एक है नारी, माथे ऊपर लगती प्यारी
जो कोई यह पहेली जाने, वह कुत्तो की बोली पहचाने

241

नर बत्तीस एक है नारी, जग मे देखो सबकी प्यारी
मन मे कर लो सोच विचार, पुरुष मरे पर जीवे नार

242

बसे सामने भीतर भेद, रग है इनका स्याह सफेद
दौलत देख लुभाई है, क्या सोना लेने आई है

243

एक कुॅआ बत्तीस किनारे,
उस पर बैठे दो बनजारे

244

एक महले मे बत्तीस नग
चमके ऐसे जैसे जग

245

नानी और कहानी के पहले है आते
दोनो मिलकर मुखडे की शान बढाते

246

काले मटके जल भर जाये
राजा पूछे मोल को दिये न जाये

247

एक जानवर ऐसा, जिसको दुम पर पैसा
सिर पर है ताज भी, बादशाह का जैसा

248

खा ले खा ले खूब मिठाई, सारी तेरे हिस्से आई
नही कही भी तेरा मान, फिर भी बनती है मेहमान

249

प्रथम कटे तो टर कहलाऊँ, अत कटे तो कोट कहाऊँ
पूरा अगर पढो जो मुझको, तो पछी का घर बन जाऊँ

250

चार पैर है लम्बी दुम है, नटखट और चतुर कहलाता
मध्य कटे तो वार कहाऊँ, प्रथम कटे तो नर हो जाता

251

एक पहेली मै कहूँ, उडी जात है लका
बिजली जैसे बल्ब चमकाती, न किवाड न पखा

252

काला है मतवाला है, कर्कश गीत निराला है
लेकिन हमे जगाता है, मुडेरो पर आता है
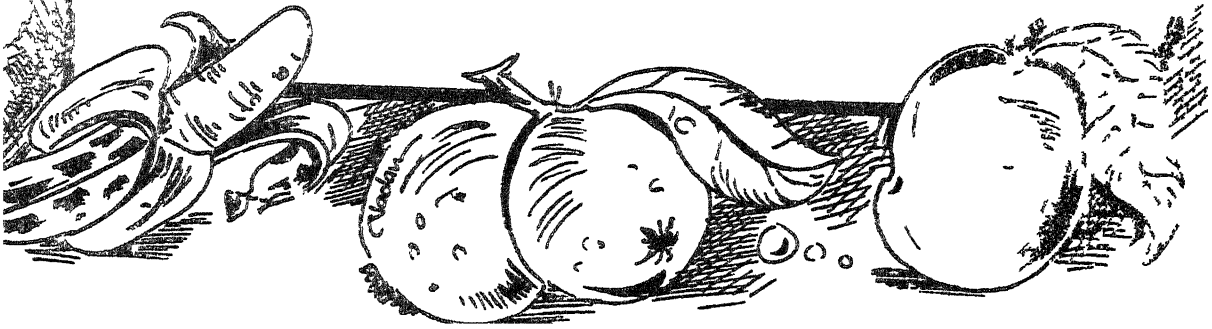
253

लाल चोच है हरियल पखे, काली कठी दम-दम दमके
हरी मिर्च का वह शौकीन, पेड पर रहता नही जमीन

254

एक पक्षी का ऐसा नाम, तीन अक्षर का उसका नाम
प्रथम कटे तो रस पिलवाये, मध्य कटे तो रिश्ता बन जाये

255

बिना पैर वह सरपट भागे, सब सुनता बिन कान
छेडो तो छोडे नही, हर लेता है प्राण

256

पूँछ कटे तो सीता, सिर कटे तो मित्र
मध्य कटे तो खोपडी, बोलो यार विचित्र

257

कितने रगो से तन मेरा, रच-रच कौन सजाता है
फूल गोद मे ले लेकर, झूला रोज झुलाता है

258

बगिया मे एक जन्तु देखा, तन काला मुख काली रेखा
पक्षी नही पर उडता जाए, पशु नही षष्ठ पद कहलाए
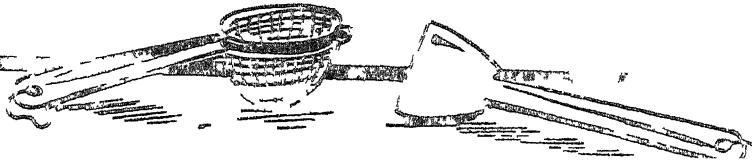
259

छोटा-सा ससार है मेरा, दूर देश न जाती हूँ
सुख-दु ख अपना कभी न कहती, जल के बाहर मर जाती हूँ

260

मोटा ताजा बडा निराला, चला झूमता मतवाला
करे नाक से अपना काम, जल्दी बूझो उसका नाम

261

उज्ज्वल बदन सुन्दर चितवन, एक चित्त दो ध्यान
देखने मे तो साधु है, लेकिन निपट पाप की खान

262

चोच लाल है पूँछ हरी है, आँखे गोल मटोल
हमको वो हर रोज सुनाता, राम नाम का बोल

263

चीज यह तुम्हारी सबकी, जानी पहचानी है
हवा मे कपडा बुनने की, इसने मन मे ठानी है

264

जिसकी होती सर्वाधिक आयु, जो मानव जैसा दिखता
लेकिन मानव के जैसा वह, नही बोल सुन सकता

265

उसको हड्डी जॅचती नही, करता रक्त का पान
अत्यन्त लघु-सा जीव है, शोर करे हे कान

266

हरे वस्त्र है गलकठी, राम नाम मुख बोले
नही साधु सन्यासी देखो, ज्ञानी अर्थ टटोले

267

सबसे लम्बी गर्दन वाला, ऐसा चोपाया है कौन
आवाज कभी नही निकालता, हरदम रहता है वह मौन

268

पॉव बिना वह दौडा जाता, सुन लेता बिन कान
शिवजी के गर्दन की शोभा, घूमे खेत-खलिहान

269

बिना यत्र और बिना ईट के , कुॅए हजार बनाए
मजदूरो का नाम जो बूझे, अमृत सा जल पाए

270

कौन सा जानवर हाथी जैसा, चिडिया घर मे दिखता
छोटी पूॅछ और बिना सूॅड, पर सीग नाक पर दिखता

271

एक अनोखा देखा घोडा, कभी न खाता है कोडा
उसका घर पानी के अन्दर, कभी-कभी चलता धरती पर

272

एक कली जो बडी अनोखी, बागो मे नही खिलती
घर हो या दफ्तर हो, दीवारो पर मिलती

273

प्रथम कटे तो बनता नीर, धड कट जाए तो बनता तीर
भला कौन वह पक्षी दीन, सिर, धड दुम है अक्षर तीन

274

एक बहादुर छोटा-सा, लगता है वह खोटा-सा
डका प्रथम बजाता है, फिर ब्लड बैक मे जाता है

275

हरा बदन मन भावना, मुखडा सुन्दर लाल
हरी मिर्च पर रीझता, मिटठू करे कमाल

276

काली पर गुणवाली बडी, रही डाल-डाल पर डोल
जब मस्ती मे कुका करती, मिसरी देती घोल

277

कान खडे कर दौड लगाता, नही पकड मे मै आता
सफेद फरका कोट पहनकर, मीलो मै दौडा जाता

278

पानी मे मै पडा हुआ हूँ, लेकिन मै नही मगर हूँ
कितना भारी सॉप बताओ, बतलाओ तो मै कौन हूँ

279

एक समय वे पछी आये, टुक देखे और छुप-छुप जाये
बिना आग के जल-जल जाये, सबके मन को खूब लुभाये

280

एक चीज है सबसे न्यारी, रास्ते बीच पडी बेचारी
ऑख नाक मुँह उसके सग, प्राण जाये प्रीतम के सग

281

एक कीट ऐसा मतवाला, देखने मे है वह काला
मेहनत करके काम बनाता, खुद से दुगना बोझ उठाता

282

भोजन करने मै चली, भोजन हो गई आप
पिछलियो से कहती गई, यह भोजन है पाप

283

उसका घर फौलादी चादर, चाहे जल हो या हो बाहर
घर साथ मे जाता है, कभी छूट ना पाता है

284

बोलो मेरी सबसे प्यारी, बसन्त ऋतु है मुझको प्यारी
जब आता आमो पर बौर, तब सुनते तुम मेरे शोर

285

अगर नही तुम करो सफाई, तब मै तुमको पड़ूँ दिखाई
रात को मै सगीत सुनाऊँ, और फिर अपनी सुई चुभाऊँ

286

दिनभर छुपा कही यह सोता, तारीकी मे जाहिर होता
आसमान मे दौड लगाता, नही किसी के मन को भाता

287

चौपाया न दो पाया मै, सब उल्टे है मेरे काम
पक्षी होकर दूध पिलाता, लेकिन मै न किसी को भाता

288

उल्टा कुआँ भरा भराया,
सुबह शाम को दूध दुहाया

289

कौन-सा वह अद्भुत बन्दर
जो उछले पानी के अन्दर

290

रत्ती भर का पेट
खा गई सारा खेत

291

रग हरा है मुँह पर लाली
गले हार है शान निराली

292

ऐसा एक अनोखा खजाना, उसका मालिक बडा सयाना
दोनो हाथो उसे लुटाए, फिर भी दौलत बढती जाए

293

बिना खाल का एक जानवर, जिसके मुँह पर बाल
रगो का वह भोजन करता, नीला पीला हरा या लाल

294

मुझे सुनाती सबकी नानी, प्रथम कटते ही होती हानी
बच्चे भूलते खाना पानी, एक था राजा एक थी रानी

295

मै ही सबको उच्च बनाती, मूर्ख ज्ञानी का फर्क बताती
मुझको पाकर उच्च बने सब, पर मेहनत से ही मिल पाती

296

काली हूँ मै गहरा पेट, मेज पर जाती लेट
लोग पेट मे मारते भाले, फिर लिखते अक्षर काले-काले

297

छोटे बडे सभी का मित्र, रोज बनाया करती चित्र
खूब चलाओ तो अडती, गर्दन छीलो तो चल पडती

298

उजला मेरा शरीर है, चित्र बने है स्याह
पढे-लिखो की सगी साथी, उनको मेरी चाह

299

एक चीज मुख काला जिसका, बिन बोले सब कहती है
पॉव नही है पर हाथो मे, सबके चलती रहती है

300

बच्चो के यह बड़े काम की, धारा इसकी उन पर निर्भर
इम्तिहान के पास कराए, अगर चलाओ निर्झर-निर्झर

301

तीन अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ बच्चो के काम
प्रथम कटे तो हाथी बन जाऊँ, अन्त कटे तो कौआ बन जाऊँ

302

तन का काला नही जुबान, न वो पडित न विद्वान्
लेकिन खुद खामोश खडा, देता रहता सबको ज्ञान

303

बच्चे उससे डरते है, वह उन पर रौब चलाता है
बतलाओ कौन है वह, जो तुमको इसान बनाता है

304

गोल-गोल घर के अन्दर, काला-काला साँप
लिखने-पढने वाले रखते, चाहे हम हो या आप

305

देखा बिन बस्ती ससार , बहते जहाँ सागर अपार
पर न बूँद पानी की होती, नही सीप न होता मोती

306

पर्वत सागर नदिया है, और दुनिया के देश
गोल-गोल धरती घूमे है, अध्यापक देते निर्देश

307

तीन अक्षर है नाम मे इसके, नही मात्रा का सयोग
साथी है यह उन लोगो की, है पढे-लिखे जो लोग

308

अतिम अक्षर कटे तो, यत्र नही पर नदिया है
पेड नही पर जगल है, आदमी नही कोई पर शहर है

309

नीला जहर भरा है जिसमे , मुँह और जीभ है साथ
साँप नही वह रहता है, पढे-लिखो के साथ

310

हाथ से बनाए मुँह से बोले,
इसने बडे-बडे भेद है खोले

311

उजली धरती काले बीज
देती हमको सुन्दर सीख

312

श्वेत बना देता है काला
चलता है बन मतवाला

313

तीन अक्षर का देश महान, जन्मे यहाँ अनेक भगवान
मध्य कटे मै भात कहाता, अन्त कटे मै भार दिखाता

314

तीन रग का सुन्दर पक्षी, नील गगन मे भरे उड़ान
सब बोले मिलकर जय उसकी, और करे उसका सम्मान

315

अन्त कटे तो जय कहलाती, जय जोडो तो बनता नगर
है पहचान गुलाबी मेरी, यहा बने जन्तर-मन्तर

316

सफेद हाथियो का वह, अद्भुत कहलाता है देश
लोग बहुत सरल और सीधे, उनका सीधा साधा वेश

317

कौन साथ थे दोनों जन्मे, किसने पिता नहीं पहचाना
किसके जन्म हुए आश्रम मे, कौन पिता से दगल ठाना

318

किसको शाप दिया दुर्वासा, किसने नही पति पहचाना
किसका पुत्र तेजस्वी निकला, जिसको है जन-जन जाना

319

किसके शासन का वर्णन कर, ह्वेनसॉग हो गया अमर
था महान् दानी वह शासक, नाम बताओ विदित अगर

320

माता-पिता का जोडा अन्धा, बहॅगी मे ले जाए बन्दा
नाम बताओ उसका भाई, जान गवॉकर आन निभाई

321

वेद कौन वह जिसमे, देवो की स्तुतियॉ विद्यमान है
ये स्तुतियॉ मत्र कहती, पाती जग मे मान है

322

मधुशाला के कवि बच्चन, जिसने अर्जित की कीर्ति महान्
उनकी कौन-सी रचना पर , मिला उनको सरस्वती सम्मान

323

क्या यह सच है, या लगते है सपने
बारह मे दो तीस घटाकर, बोलो बचेगे कितने

324

कमी विटामिन ए की हो, रोग कौन-सा हो जाता
नही रात को दिख पथ पाता, व्यक्ति भटकता दु ख पाता

325

कौन लुटेरा था वह, जो भारत मे आया
सत्रह बार लूटकर जिसने, निर्धन हमे बनाया

326

दो पग चले चार लटकाए, चले जात सुख चैना
अजब तमाशा हमने देखा, तीन जीभ दो नैना

327

सोमनाथ की रक्षा करने, किसने लडी लडाई
हमे बताओ यदि जानो तो, तुमको राम दुहाई

328

किसका शासन मुगलकाल, का स्वर्ण युग कहलाया
किसने पत्नी की समाधि पर, प्रेम महल बलवाया

329

आजादी का दीवाना था, आजाद ही कहलाता था
मूँछो पर ताव देता था, अग्रेजो मे खौफ बिठाता था

330

घोडे की सवारी करता था, भाला साथ मे रखता था
जगल मे घास रोटी खाई, फिर भी जारी रखी लडाई

331

था जिनका अचूक निशाना, ऐसा आजादी का दीवाना
जन्म हुआ जिसका उन्नाव, हरदम देता मूँछो पर ताव

332

नाना के सग पढती थी वह, नाना के सग खेली थी
बरछी तीर कृपाल कटारी, उसकी यही सहेली थी

333

किसने दी स्वामी भक्ति की मिसाल, मरवा डाला स्वय का लाल
राजवश को बचा लिया, अपना सब कुछ लुटा दिया

334

राजा रहते थे महलो मे, राजपाट ही उनका मगल थे
उसके राजमहल तो केवल, अरावली के जगल थे

335

कहॉ हुई थी घमासान, वह पन्द्रह सौ छब्बीस की
निर्णायक टक्कर थी जो, बाबर लोदी इब्राहीम की

336

दूजा गॉधी कहलाता था, सीधा-सादा था वह पठान
सीमान्त प्रान्त का वासी था, भारत रत्न पाकर बना महान

337

ऐसा अनोखा देशभक्त था, जिसने एक फौज बनाई थी
खून के बदले आजादी की, जिसने गुहार लगाई थी

338

अपनी ही ऑखो के आगे, कटवाया जिसने स्वय का लाल
कौन थी वह महान्, स्वामी भक्ति की जिसने दी मिसाल

339

कौन था जिसके बल पर, स्वाधीनता आन्दोलन रग लाया
रखता था शेरो का दिल, पजाब केसरी कहलाया

340

यशी चोर और यशी पहरूवा, पहरू के नही काया
धनी कहे मोर सरबस लैगा, चोर भितर नही आया

341

भारत भर का राज दुलारा, राष्ट्रपिता कहलाता था
गोल-गोल चश्मा और लॅगोटी, हरिजनो का दोस्त कहाता था

342

क्यूरी दम्पती जनक जननी, तारीफ का पहना जामा
तीन नाम के बेटे मेरे, अल्फा बीटा गामा

343

पल मे हिन्दी मे खबर, जा पहुँची मैसूर
किसने यह जादू किया, गया सदेशा दूर

344

अणु-परमाणु का टुकडा किया, वैज्ञानिक था कौन
तीन नाम उसने दिये, इलेक्ट्रान न्यूट्रान और प्रोटान

345

कौन सी नदी बगाल का, कहलाती है शोक
बता सकेगे आप भला क्या, हमे जरा-सा सोच

346

कौन था जो भारत का, प्रथम प्रधानमत्री बन पाया
जो बच्चो के प्यार की खातिर, चाचा चाचा कहलाया

347

कौन है जो भारी बदन, हाथी का मुँह लेकर आया
सभी देवताओ मे प्यारा, प्रथम पूजनीय कहलाया

348

वह मोती की पोती थी
जिसके जूडा न चोटी थी

349

रथ के आगे-आगे चलता, बरखा के हूँ बीच
मोटर के मै पीछे रहता, बोलो कौन हूँ मीत

350

तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान
अन्त कटे तो पानी होता, पानी ही है मेरा धाम

351

एक नारी मेरे मन भावे, न वह पहने न वह खावे
बूढो को वह राह बतावे, जवानो के वह हाथ न आवे

352

खडा-खडा वह बाल बनाता, एक पुरुष जो सबको भाता
बच्चा बूढा जो भी जाता, उसके आगे शीश झुकाता

353

एक पहेली मै कहूँ , सुन ले मेरी राधा
बिन पखो के उड गई, बॉध गले मे धागा

354

बिना पैरो के ही चले, तेज अश्व से चाल
बतलाता सक्षेप मे, जो आवश्यक हाल

355

हरी-भरी मेरी काया, चार अक्षर का नाम है पाया
छूते ही कुम्हला जाती हूँ, बतलाओ क्या कहलाती हूँ

356

हरे गुलाबी लाल बैगनी, नीले पीले काले
बिना पख के उडे गगन मे, बच्चो का मन हरने वाले

357

गहनो मे जडकर यश पाता, महिलाओ के मन को भाता
इसकी देखो शान निराली, उल्टा होकर पथिक कहाता

358

एक पक्षी ऐसा, जो दूर उडे आकाश मे
है निर्जीव मगर आ जाए, जब भी बुलाओ पास मे

359

तीन अक्षर का मेरा नाम, धातु मे बहुत मूल्यवान
मध्य कटे तो नीम बनूँ, अन्त कटे तो नील बनूँ

360

सदा नाक पर सवार रहूँ, पकडकर दोनो कान
मुझे पहनकर लोग दिखाते, पढाकू जैसी शान

361

आदि कटे तो दशरथ सुत होता, मध्य कटे तो आम
अन्त कटे तो काटूँ लकडी, बोलो पूरा नाम

362

काली-काली बकरी, लाल-लाल बच्चे
जहॉ जाती बकरी, वही जाते बच्चे

363

चार खूँट का चबूतरा, बावन गज की डोर
राजा गया शिकार को, रानी ले गया चोर

364

बसी पेड पर काशी नगरी, नीचे उसका द्वार
हवा चलने पर है हिलती, बूझो बच्चो सार

365

एक टॉग पर घूम-घूमकर, खीच तार बल देती
उॅगलियो के समझ इशारे, रुकती फिर चल देती

366

बॉध दिये जब पॉव हमारे, तब हमको चलने देता
दॉत नही होते है उसके, काटे हमे फिर भी लेता

367

बीच कटे तो कान बने, अन्त कटे तो भी कान बने
मुझ पूरे का अर्थ तू, बस जगल है जान

368

अन्त कटे तो कदम बने, बीच कटे तो डर
सोच-समझकर जरा बताओ, पैर पडे उसी पर

369

तीन चरण आकाश मे, एक चरण पाताल
गर्मी मे शीतल करे, रख सके खुशहाल

370

एक पुरुष बहुत गुन भरा, लेटा जागे-सोवे खडा
उल्टा होकर डाले बेल, यह देखो करतार का खेल

371

बात बताई चुप-चुप उसने, दूसरा कोई सुन न पाये
जरा बताओ क्या है भइया, घर तक जो सबके आ जाये

372

बन मे कपटी वन मे कपटी, बन मे किया श्रृगार
बारह वर्ष पानी मे रहती, तिस पर पडा तुषार

373

तीन अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम
उल्टा-सीधा एक समान, दूसरे अर्थ मे मै मूल्यवान

374

चार अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ किसी के काम
जो भी अपनाता है मुझको, बन जाते है उसके काम

375

इधर से आई जाटनी, उधर से आया जाट
दोनो ऐसे मिल गये, चक्की के जैसे पाट

376

लाख टके का पिजरा, पडा चौक के बीच
रात दीवाना पडा रहा, दिन पचो के बीच

377

तीन अक्षर का मेरा नाम, जल मे चलना मेरा काम
मध्य कटे तो अद्‌भुत बात, न्याय सभी का मेरे हाथ

378

बच्चा बूढा जो हो भाई, बडे मजे से खाता
उससे पेट नही भरता है, खाने वाला पछताता

379

हॅसते ही वे लुट गई, पडा छोडना देश
क्या कुछ न बनना पडा, बदल-बदल के भेष

380

लाल-लाल मै डिब्बे जैसा, डिब्बे मे होता एक छेद
हरदम इसमे ताला लटका, बोलो क्या है इसका भेद

381

गागर इसकी जल भरी, सिर पर लगी है आग
गुड-गुड बजती धुन है, तब निकलता काला नाग

382

बेजान हूँ फिर भी, फर-फर करती फिरती हूँ
जब चाहो तब उडाओ, आसमान मे उडती हूँ

383

काली-काली मॉ के, हमने देखे लाल बच्चे
मॉ जिधर को जाती जाए, बच्चे पीछे-पीछे चलते जाए

384

पानी मे निस दिन रहे, जाके हाड न मॉस
काम करे तलवार-सा, फिर पानी मे वास

385

आदि कटे तो जगल होता, अत कटे होता ससार
मध्य कटे तो करता भन-भन, धरती है इसका आधार

386

कभी दूर से कभी पास से आती, सबको अपनो से मिलवाती
न देखती न मुँह से बोलती, फिर भी कैसे भेद हृदय के खोलती

387

लकडी का एक सुन्दर घोडा, डोर छूटते ही वह दौडा
नाच-नाचकर खूब रिझाया, बच्चो का भी मन बहलाया

388

दरी मे वह अकेला है, और ड्योढा है चद्दर मे
रेशम मे होता नही, पर रहता खादी खद्दर मे

389

पगडी ओढे पगडी छोडे, कैसा मुर्दा आया
पडा धरा पर नाच दिखाये, अजब है मुर्दे की काया

390

लिख कर फरियाद है करते, फिर उससे दुखडा कहते
छानबीन वह करता भारी, फैसला माने दुनिया सारी

391

सग नदिया पर शिव नही, मॉग-मॉग के खाय
है त्यागी वह गृहस्थ नही, ज्ञानी सोच उत्तर बतलाय

392

प्रथम कटे तो कदम बनाता, मध्य कटे तो बनता डर
उत्तर जल्द बताओ बच्चो, बढते पॉव उसी पर रख कर

393

चार-पॉच दिन माह मे आऊॅ, मौज-मस्ती का दिन कहलाऊॅ
बच्चे भी मुझको गले लगाते, सप्ताह भर की थकान मिटाते

394

उडता है पर पक्षी नही, फौलादी है इसके सब अग
सर्दी-गर्मी और बरसात मे, सदा बना रहे मलग

395

चार खूॅट का नगर बसा है, चार कुएँ बिना पानी
चोर अठारह उसमे बैठे, सग लिये इक रानी

396

आदि कटे दशरथ सुत बनता , मध्य कटे तो होता आम
अन्त कटे तो बने शहर यह, क्या है बोलो इसका नाम

397

आसमान मे उडता जाए, वृक्ष पर घोसला नही बनाए
रहने को धरती पर आए, तूफानो से न घबराए

398

पानी की लहरो पर हरदम, दौड लगाया करती हूँ
लोगो को किनारे पहुँचाकर, गर-गर करके चलती हूँ

399

तीन अक्षर का सुन्दर नाम, खिलना मुस्काना मेरा काम
प्रथम कटे मिट्टी बन जाऊँ, अत कटे मै नीर कहाऊँ

400

प्रथम कटे तो तल हो जाऊँ, मध्य कटे मै शील कहाऊँ
तीन अक्षर का ऐसा नाम, गर्मी मे सब लेते नाम

401

धड न रहे तो मन रहता है, बेसिर के रहता है कान
तीन अक्षरो का तन मेरा, बूझो तो समझूँ विद्वान

402

एक जगह पर बॉस बरेली, एक जगह पर कुँआ
एक जगह पर आग लगी, एक जगह पर धुआँ

403

एक पुरुष और लाखो नार, जले पुरुष देखे ससार
खूब जले और हो जाये राख, तब इन तिरियो की होवे साख

404

एक नारी का यह भूगोल, नीचे चपटी ऊपर गोल
जब वह सिर पर आग लगावे, जो देखे सबके मन भावे

405

एक नर सवा लाख नारी, चढे सेज पर एक ही बारी
नर जले नारी करे श्रृॅगार, कितना बडा अचम्भा यार

406

ऊॅची नही पर लम्बी थी, नीचे-नीचे आई थी
देखी है पर चखी नही, कसम खुदा की खाई थी

407

लोहे का रास्ता लोटे की टॉग, उस पर बिता दूॅ जीवन तमाम
अपने रास्ते पर चलती जाऊॅ, दुनिया भर की सैर कराऊॅ

408

धड काटा तो मन मिला, सर खोला तो कान
पैर काट उलटा किया, काम बना पहचान

409

देह काठ पेट मे छेद छ आठ, कन्हैया की जानी पहचानी
मुॅह मे जीभ नही होती, फिर भी बोले मीठी वाणी

410

सेहरा बॉधा पॉव मे, साथी हुये बाराती
पेट मे उसके आग लगा दी, और चढा दिया फॉसी

411

चार कोण का चबूतरा, चौसठ घर ठहराये
चतुर पुरुष खेला करे, मुरख देखत रह जाये

412

खाते है उसको सब लेकिन, स्वाद न कोई बता सका
लोग खिलाते भी है लेकिन, उसे न कोई चखा सका

413

काठ का एक घर बनाया, उसको जल मे दिया उतार
उसने सबको दिल मे बिठाया, और कर दिया सबको पार

414

इसके बिन कैसे बन पाता, पूछो अपने घर से
देते है इसका जवाब, कुछ लोग यहॉ पत्थर से

415

खुद तो कही नही वह जाती, सबको दूर-दूर पहुँचाती
काली-काली यह मतवाली, तारकोल रोडी है खाती

416

हम मॉ बेटी तुम मॉ बेटी, चलो बाग मे जाएँ
तीन सतरे तोडकर, साबुत-साबुत खाएँ

417

एक चीज ऐसी कहलाए, हर कोई मजबूरी मे खाए
पर कैसी मजबूरी हाय, खाकर भी भूखा रह जाए

418

रात समय एक मेवा आया, फूलो पातो सबको भाया
आग से वह जाये खिल, मुरझाये वह पानी से मिल

419

देश-विदेश फिरे इक नारी, जिसने देखी चीरी-फाडी
देखो लोगो उलटा दौर, गूँगी होकर मचावे शोर

420

पर और बाजू कुछ नही रखे, खाना खाये न पानी चखे
गोस्त-पोस्त के वह नही पास, पल मे चढके उड़े आकाश

421

'क' कटकर पानी बनता, 'ज' कटकर बनता काल
पहेली ने बिछाया देखो, कैसा अनोखा जाल

422

काम दूसरो के जो आता
बोलो वह क्या है कहलाता

423

साथ-साथ मै जाती हूँ
हाथ नही मै आती हूँ

424

दीदी गई फरीदाबाद
उसकी चोटी इलाहाबाद

425

मेरा भाई बडा शैतान
बैठे नाक पर पकडे कान

426

हरा आटा लाल परॉठा
सखियो ने मिलकर बॉटा

427

एक कुॅए के घाट हजार
हर घाट मे एक पनिहार

428

हमने देखा हरा था आटा
पर वह बन गया लाल पराठा

429

पैर नही पर चलती रहती
मजिल तक वह पहुॅचा देती

430

बिना दादी का पोता
दीवार पे चढ के रोता

431

सदा करूॅ मै चौकीदारी
मेरे दम पर दुनियादारी

432

छ टॉगे दो तुम देखा
बीच पीठ मे दुम देखा

433

एक अनोखी देखी गाय
खाना खाते गाना गाए

434

एक किले के द्वार अनेक
भीतर बसने वाला बस एक

435

हमने देखा जिधर-जिधर
मिलती घूमती उधर-उधर

436

एक चीज ऐसी कहलाये
हर मजहब का आदमी खाये

437

बूझ बाराती फल एक सुन्दर
फूल पान सब इसके अन्दर

438

दिनभर ढोता बोझ कमर पर, कभी नही शरमाता हूँ
मेरी यह मजबूरी देखो, फिर भी डण्डे खाता हूँ

439

हरदम वह चिल्लाता है, सबका झूठा खाता है
कौन आता है कब जाता है, सबको यह बललाता है

440

रात मे जागे दिन को सोता, उसका नाम बताए
देखो बच्चो डर मत जाना, अगर सामने आये

441

चट चतुर चालाक बहुत, क्या दे उसका नाम
एक डपट मे देखो मैया, करने लगे सलाम

442

बहुत ही सीधी-साधी मैया, दूध बहुत देती है मैया
चारा दिन भर खाती है, कहते है सब उसको मैया

443

मीठे बोल सुनाती है, सबके मन को भाती है
यदि तनिक भी शोर हुए तो, पेडो मे छिप जाती है

444

सीना चौडा लम्बी गर्दन, रेत का जहाज कहाऊँ
चाहे जितनी हो मुश्किल पर, मजिल तक पहुँचाऊँ

445

कभी इधर तो कभी उधर , भरी चौकडी गया किधर
उछल कूद पर करता है, बस शेरो से डरता है

446

गुटर-गू गुटर-गू, आगे मै और पीछे तू
ऊँची छत पर मेरा घर, उड जाऊँ मै फर-फर-फर

447

इक नन्ही सी जान हूँ मै, कभी नहीं घबराती हूँ
मजिल कितनी भी ऊँची हो, पलभर मे चढ जाती हूँ

448

अपनी मस्त चाल से, सबका मन बहलाता है
इसीलिए सारे जगल मे, दादा वह कहलाता है

449

जल मे जिसका है ससार, जल से उसको बहुत है प्यार
जल ही उसका जीवन साथी, जल से बाहर जी नही पाती

450

जगल का है वह राजा, जगल मे है उसका राज
यदि सोने चला गया तो , मत देना उसको आवाज

451

रहता हरदम मस्त-कलदर, मस्ती भरी है उसकी चाल
गली मौहल्ला हो या सरकस, हरदम करता रहे कमाल

452

देखो मै हूॅ रग-बिरगी, सबके मन को भाती हूॅ
फुदक-फुदक फूलो पर चलती, हाथ लगे डर जाती हूॅ

453

बार-बार मत छेडो उसको, वरना पीछे पछताओगे
बिल से बाहर जब निकलेगा, तुम सारे डर जाओगे

454

मुॅह मे उसके मिर्ची डालो, चाहे जिसकी नकल करा लो
रटता रहता राम-राम, तुम बतलाओ उसका नाम

455

फुदक-फुदककर करती है, दिनभर अपना काम
जब हो जाये घना अधेरा, तब करती आराम

456

मै हूॅ इक नन्ही सी चिडिया, क्या है मेरा नाम
सुन्दर सा घर-द्वार बनाना, यही है मेरा काम

457

फुदक-फुदक कर चलता है, रुई का गोला लगता है
रहता उसमे हरदम जोश, उडा दिये ना सबके होश

458

रग-बिरगा प्यारा-प्यारा, लगता है यह न्यारा-न्यारा
कितना मोहक इसका शोर, सबके मन की खीचे डोर

459

देखा उसका मैला रग, लगी रहे वह पी के सग
रोशनी मे वह सग विराजे, अधेरे मे साथ छोड़कर भागे

460

इक नागिन लहराती जाये, सबका दिल दहलाती जाये
निगले-उगले लाखो मन , फिर भी सौपे तन-मन-धन

461

एक टॉग की काली होती, जाडो मे जो हरदम सोती
गरमी मे वह छाया देती, वर्षा मे वह हरदम रोती

462

तीन पॉव पर हाथ नही, तन है बडा कठोर
न आये न जाये कही, खडी रहे नित ठोर

463

बैठा रहे जो ऊँट के जैसा, तन है बडा कठोर
न आये न जाये कही, खडी रहे नित ठौर

464

मस्त बहुत रहता है जो, व्यस्त बहुत रहता है जो
गाजर मूली खाकर मैया, स्वस्थ बहुत रहता है जो

465

कल की खातिर इक-इक दान, घर तक लाना इसका काम
सबसे छोटी जीव है ये, जल्दी बोलो क्या है नाम

466

सबको लगता उससे डर, गुम हो जाये लगे पल भर
सबके तन को ढकती है, छोटी सी वह लगती है

467

गर्मी मे वह पास न आये, सर्दी सबकी दूर भगाये
आती रातो को वह काम, अब बतलाओ उसका नाम

468

उसके ऊपर सब चढ जाते, हल्का हो या भारी
छोटी लगती उसके आगे, हर इक चार दीवारी

469

कितनी मीठी बोल रही है, मन मे मिसरी घोल रही है
सबके मन को भाती है, बताओ क्या कहलाती है

470

बचपन हरा जवानी पीली, लेकिन राजा-कहलाये
हो जवान या बच्चा बूढा, सबके मन को भाये

471

रातो मे वह आता है, सबके मन को भाता है
उसकी चमक बडी निराली, जैसे चमक रही हो थाली

472

चलते है चलता नही, गजब निराली शान
खबर उसे है इधर-उधर की, लोग सभी हैरान

473

चलता हूँ तब चलती है, यदि रुकूँ रुक जाये
बिना साथ लिये भी इनको, इक पल चला न जाये

474

जिसमे मिल जाता है, उसका ही हो जाता है
जीवन देना उसका काम, क्या है बच्चो उसका नाम

475

एक आग का गोल, फिर भी मन को भाये
निकले दिन उसके ही दम से, रात हुए ढल जाये

476

नानी ने कही एक कहानी, एक था राजा एक थी रानी
पर पहरा वे देते थे, अलग-अलग ही रहते थे

477

बिना हवा के घूम रहा है, सबके ऊपर झूम रहा है
चले हवा तो रुक जाये, उसका नाम बताते जाये

478

पढे लिखो मे उसका नाम, आता है पर सबके काम
कभी किसी को देता जीवन, कभी किसी का काम तमाम

479

सबके घर मे उसका घर, काम सभी के आये
रातो की रानी कहलाती, दिन मे घूँटी पर चढ जाये

480

बीन है पर बजती नही, दूर का पास दिखाये
उत्तर इसी पहेली मे है, खोजो या बतलाएँ

481

धीमी-धीमी जिसकी चाल, कमर पर बॉधे है ढाल
जीत का सेहरा जिसके सर पर, बतलाओ किसका है कमाल

482

कली है पर खिलती नही, डाली पर भी मिलती नही
सभी खून है उसको माफ, नाम बतलाओ उसका साफ

483

ना समझो कुछ भी नही, समझो तो है बहुत महान
इक नन्ही सी चीज है वो, देती रहती सबको ज्ञान

484

उसके आगे रहता र, उसके पीछे रहता र
तीन अक्षर का है यह नाम, एक पेड का है यह नाम

485

मुझसे है सब जीवन पाते, फिर भी मुझे देख न पाते
अपने पास मुझे तुम पाओ, मानू अगर जो नाम बताओ

486

समय असमय मै चिल्लाता, पर न कोई तकलीफ पहुचाता
दूर बेठो से बात करवाता, न कही जाता न कुछ खाता

487

एक औरत ने ऐसा किया, साप मार ताल मे दिया
उल्टा साप ताल को खाय, कैसा अजब तमाशा हाय

488

गर्दन मोड पेट मे रख ले, फिर भी वह कछुआ ना
इस छग से वह छिपे पेट मे, कहलाये वह बटुआ ना

489

चार है उसके टिक्कम टिक्का, बीच मे उसका है बाना
दो छोटी दो बडी भुजाये, भेद है हमने जाना

490

दो सीग हरा रग मेरा, जल मे उपजा जाल मे आया
खाल उतारी मेरे तन की, कच्चा पक्का सबने खाया

491

तीन आख वाला है, सिर पर जटा वाला है
मन्दिर से रिश्ता है उसका, पर वह नही शिव डमरू वाला है

492

ऊपर नीचे मेरे काटे, खाने मे मै मीठा
बच्चे बडे सभी है खाते, लगता जैसे अडा

493

हरे रग की चोटी मेरी, गाठ लिये मै लाठी हू
घर-घर मे मै खाया जाता, गुड शक्कर का व्यापारी हू

494

हरा रग मुझे है प्यारा, शीत ऋतु भी है प्यारी
घर-घर के मुरब्बे अचार मे, मेरी चाहत न्यारी

495

हरा रग सिर कडवा, एक अनोखी बात है इसमे
जो टोपी को काटकर खाओ, हरदम स्वाद भरा फिर इसमे

496

एक गेद ऐसी, जो देखने मे होती एक
काट के उसको जब भी देखो, एक नही होते अनेक

497

यहा देखा वहा देखा, और देखा कलकत्ता
एक अजूबा हमने देखा, पत्ते के ऊपर पत्ता

498

उल्टी होती उसकी गिनती, बिना पाव के उडता
आसमान की सैर करता, रोज नई नई खबरे देता

499

खुली रात मे पैदा होती, हरी घास मे सोती
मोतियो सी है सूरत मेरी, मै बादलो की पोती

500

किसने धरती गगन बनाया, सूर्य चन्द्र चमकाए
डाल डाल पर, रग रग के सुदर सुमन खिलाए
रचता सब ससार, नित्य करता उसकी रखवाली
इतना बडा बाग है, फिर कौन है इसका माली

501

मेरे अन्दर बीज समाया, सब फलो मे मोटा
फिर भी मुझको खाए चाव से, क्या बडा क्या छोटा

502

लाल डिब्बा पीले खाने
उसमे लगे मोती के दाने

503

देश विदेश मे खबरो को, सग मे अपने लाता हूँ
ज्ञान देने का अच्छा साधन बस मै ही कहलाता हूँ

504

राजा रानी की सुनो कहानी
एक घडे मे दो रग का पानी

505

कोई कहे मुझे बीता हुआ, कोई कहे आने वाला
दो अक्षर से जाना जाता, बतलाये कोई बुद्धिवाला

506

चार अगुल का पेड है, सवा मन का पत्ता
फल लगे अलग अलग, पक जाये इकटठा

507

कभी न वह खाना खाए, और पीए न पानी
इसकी बुद्धि के आगे तो, हार मानते ज्ञानी

508

टेढी मेढी गलिया
बीच मे कुआ

509

जब आता तैश दिलवाता, धैर्य विवेक न रह जाता
अनहोनी घटना करवाता, बोलो वह क्या कहलाता

510

तीन अक्षर का मेरा नाम, खेल का यह नाम
प्रथम कटे तो बिल्ली कहाए, जो बताए बुद्धिमान

511

एक फूल है काले रग का, सिर सदा सुहाय
तेज धूप मे खिल जाता, वर्षा हो या धूप कडी

512

मै पैरो के नीचे आती, और रास्ते मे बिछ जाती
हटा नही मुझको पाते, सोचो जल्दी क्या बताते

513

चादपुर से चलकर आई, कानपुर मे पकड़ी गई
हाथपुर के फैसले से, नखपुर मे मारी गई

514

चोर नही, डाकू नही, नही कही की रानी
बत्तीस सिपाही घेरे रहते, तनमन पानी-पानी

515

मेरे पेट मे बसा नगर, नही नगर मे रहू 'मगर'
सदा तैरता हू जल मे, समझना न मुझे 'मगर'

516

गोलगोल घर है मेरा, हर कमरे मे रस
ज्यो ही मूह मे रखोगे, हो जाओगे मस्त
एक चकरी है गोलगोल, गली गली मे रस
इसका उत्तर झट बतलाओ, रुपये मिलेगे दस

517

तीन रगो का सुन्दर पक्षी, नील गगन मे करे उडान
जय जय कारे बोले सारे, दे उसको पूरा सम्मान

518

निखट्टू बन बैठे रहते, बस चुप रहते देखा करते
चाटे जब मुह पर पडते, शोर मचाते हल्ला करते

519

महफिल मे आए दो भाई, आते ही हो गई ठुकाई
मुह पर लगे तमाचे खाने, दोनो लग गये ताल लगाने

520

ऐसा कोई फुटबाल मगा दे, जिसमे हो ये सारा
शर्बत, मिसरी, साग चबैना, और बकरी का चारा

521

काटो से निकल, फूलो से उलझे
नाम बताओ, पहेली सुलझे

522

दो अक्षर का मेरा नाम, आता हू मै सबके काम
चोरो से मै रक्षा करता, अब बतलाओ मेरा नाम

523

मैने राजा रक बनाये, सब जन मुझको गले लगाये
क्या लखपति, क्या नगाराम, सबको पडता मुझसे काम

524

बिना धोए ही सब खाते है, खाकर ही पछताते है
बोलो ऐसी चीज है क्या, कहते सब शरमाते है

525

पहाड़ है पर पत्थर नही, नदी है पर जल नही
शहर है जीव नही, जगल है पर पेड नही

526

पानी का मटका, पेड पर अटका
हवा को हो झटका, उसको नही है खटका

527

काठ का एक घर बनाया, जल मे दिया उतार
सबको अपने दिल मे बिठाया, कर दिया सबको पार

528

एक चोर काला लबा, चलते चलते छुप जाए
पहन कर रखता काठ के कपडे, बतलाओ

529

क्या गजब करते हो भाई
काट कर सिर मेरा, खुद ही रोते हो

530

हरे हरे है इनके बाल, लबी गर्दन मोटी खाल
पैर इनके जैसे जाल, इन्ही से हमारा जीवन खुशहाल

531

एक जगह पर खडा हू, परहित पर अडा हू
मेरी पूजा करते मानव, मुझको काटा करते दानव

532

कागज का घोडा, धागे की लगाम
छोड दो धागा, तो करे सलाम

533

काठ के गिलाफ मे बैठे है, सुर्ख रग
जिगर जिनका देखिए, दूध का सा रग

534

पानी से बनती, पानी दे जाती
मिटकर यह पानी हो जाती

535

श्याम बदन पीताम्बर काधे, मुरलीधर नही होय
बिना मुरली वह नाद करत है, बिरला बूझे कोय

536

प्रथम कटे तो जगल होता, अत कटे तो ससार
मध्य कटे तो भन-भन है, धरती का आधार

537

हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी
राजा जी के बाग मे, दुशाला आढे खडी थी

538

कभी बसती रग उड़ाये, कभी ग्रीष्म बन छाए
कभी शीत के झौके मारे, रह रह कर हमे कपाए
बादल बन कर गाव नगर मे, अमृत जल बरसाए
कौन धरा पर बारी-बारी, ये परिवर्तन लाए

539

अगर कहीं मुझको मिल जाता, बडे प्रेम से तोता खाता
बच्चे बूढे यदि खा जाए, व्याकुल हो कर जल मगवाए

540

दिन को सोऊ, रात को रोऊ, अश्को से बदन भिगोऊ
पल पल घटती जाऊ, लेकिन उजाला मै फैलाऊ

541

हमने देखा ऐसा बदर
जो उछले पानी के अन्दर

542

एक महल मे बुर्ज हजार, बुर्ज बुर्ज पर पहरेदार
ऐसा अजीब किला बनाया, न मिट्टी न चूना लगाया

543

कद के छोटे, कर्म के हीन
बीन बजाने के शौकीन

544

दुश्मन को भी दोस्त बनाती, मान सभी से है दिखलाती
गैरो को अपना कर जाती, बोलो बच्चो क्या कहलाती

545

बचपन से रही हरी, हुआ बुढापा लाल
जिसने मुझको काट लिया, उसका बिगडा हाल

546

ठाकुर क्षत्रिय की हूँ जान, दो अक्षर का मेरा नाम
बच्चो से खुद दूर रहूँ, खूब बनूँ मर्दों की शान

547

लिखती हू पर कलम नही, बहती हू पर जल नही
खिलती हू पर कमल नही, बताओ फिर मै कौन हू

548

पैरो मे जजीर पडी है, फिर भी दौड लगाऊ
पगडण्डी पर चलू झूम के, गाव गाव पहुचाऊ

549

दो पहियो पर सैर कराऊ, नहीं कभी भी इधन खाऊ
पैर चलाओ दौड लगाऊ, ब्रेक लगाओ तो रुक जाऊ

550

जिसको भी मिल जाती है, मन उसका खिल जाता है
मेहनत, लगन और हिम्मत पर, बस उसका दिल आता है

551

मन मे आता और जगाता पुन नया विश्वास
राह दिखाता, लक्ष्य दिखाता, देता सच्ची आस

552

तीन अक्षर का मेरा नाम, गर्मी मे आता काम
प्रथम कटे राही कहलाऊ, बिना अत के नशा कराऊ

553

पहले बेलन रौदे मुझको, फिर गर्म हवा झुलसाये
है कोई यहाॅ बुद्धिमान, जो मेरा नाम बतलाये

554

काला कम्बल-कटवा जाली
बैल है, पर दो है - हाली

555

बिन बोले कह जाती है दिल की सौ सौ बाते
बद करो तो हो जाती है, सारी दुनिया की राते

556

एक थाल मोतियो भरा, सब के सिर पर औधा धरा
चारो तरफ थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे

557

बहुत बड़ा है पेट, सारी जगह लेता समेट
सुबहशाम मे आता हू, सब के मन को भाता हू

558

सिर पर पत्थर, मुह मे ऊगली
पैर नही पर बैठे मार कुण्डली

547

लिखती हू पर कलम नही, बहती हू पर जल नही
खिलती हू पर कमल नही, बताओ फिर मै कौन हू

548

पैरो मे जजीर पडी है, फिर भी दौड लगाऊ
पगडण्डी पर चलू झूम के, गाव गाव पहुचाऊ

549

दो पहियो पर सैर कराऊ, नहीं कभी भी इधन खाऊ
पैर चलाओ दौड लगाऊ, ब्रेक लगाओ तो रुक जाऊ

550

जिसको भी मिल जाती है, मन उसका खिल जाता है
मेहनत, लगन और हिम्मत पर, बस उसका दिल आता है

551

मन मे आता और जगाता पुन नया विश्वास
राह दिखाता, लक्ष्य दिखाता, देता सच्ची आस

552

तीन अक्षर का मेरा नाम, गर्मी मे आता काम
प्रथम कटे राही कहलाऊ, बिना अत के नशा कराऊ

553

पहले बेलन रौदे मुझको, फिर गर्म हवा झुलसाये
है कोई यहाँ बुद्धिमान, जो मेरा नाम बतलाये

554

काला कम्बल-कटवा जाली
बैल है, पर दो है - हाली

555

बिन बोले कह जाती है दिल की सौ सौ बाते
बद करो तो हो जाती है, सारी दुनिया की राते

556

एक थाल मोतियो भरा, सब के सिर पर औधा धरा
चारो तरफ थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे

557

बहुत बडा है पेट, सारी जगह लेता समेट
सुबहशाम मे आता हू, सब के मन को भाता हू

558

सिर पर पत्थर, मुह मे ऊगली
पैर नही पर बैठे मार कुण्डली

पहेलियों के उत्तर

1 चॉद 2 कमल 3 समय 4 ओला 5 पसीना 6 चन्द्रमा 7 रात व चन्द्रमा 8 कोहरा 9 आकाश 10 कुकुरमुत्ता 11 अन्धकार 12 बादल 13 धूप 14 ओस 15 ओला 16 गर्मी, सर्दी व बरसात 17 गर्मी 18 सूरज-चॉद 19 बिजली 20 सूरज 21 कपास 22 पृथ्वी 23 सूरज 24 अमरबल 25 वर्षा 26 केन्डोर 27 आग 28 परछाई 29 ओस 30 कोयला 31 सूर्य-चॉद 32 परछाई 33 परछाई 34 बादल 35 ओला 36 गगन 37 अमरबेल 38 कमल 39 परछाइ 40 लकडी 41 दिन-रात 42 सूर्य का स्वभाव 43 बुलबुला 44 ओस की बूॅदे 45 ओला 46 ओस 47 ओम 48 नीम 49 वृक्ष 50 चन्द्रमा 51 अण्डा 52 आक के डोडे की रूई 53 ओस 54 परछाई 55 परछाई 56 मेहॅदी 57 मेहॅदी 58 चॉद-सूरज 59 वर्ष 60 जल 61 छुइ-मुई 62 लज्जा 63 परछाई 64 वर्ष 65 मेहॅदी 66 समय 67 वर्ष व महीना 68 सूरजमुखी 69 नीद 70 धुऑ 71 परछाई 72 चकला 73 दीपक व बाती 74 माचिस 75 कैची 76 छतरी 77 चूल्हा 78 दीपक 79 चूल्हा 80 चक्की 81 माचिस 82 चारपाई 83 कुर्सी 84 पखा 85 कुर्सी 86 घडा 87 घडी 88 छतरी 89 कघी 90 झाडू 91 कैची 92 कैची 93 चारपाई 94, चूल्हा 95 मूढा 96 माचिस व तीलियॉ 97 दीपक 98 घडी 99 कलेण्डर 100 मामबत्ती 101 रोटी व तवा 102 रेडियो 103 माचिस 104 चाकू 105 झाडू 106 गरी(नारियल) 107 पान 108 भुट्टा 109 बैगन 110 सीताफल 111 नमक 112 हल्दी 113 तरबूज 114 अडा 115 भुट्टा 116 चूना 117 बन्दगोभी 118 नारियल 119 भोजन व अगुलियॉ 120 नारियल 121 आम 122 गुलाब जामुन 123 अफीम 124 गन्ना 125 मिर्च 126 अगूर 127 केला 128 मूली 129 नारियल 130 लीची 131 पपीता 132 नारियल 133 तरबूज 134 पपीता 135 भुट्टा 136 तरबूज 137 छाछ 138 कढी 139 चना 140 गन्ना 141 पपीता 142 गन्ना 143 शहद 144 आइसक्रीम 145 आइसक्रीम 146 जलेबी 147 हरीमिर्च 148 आम 149 आम 150 मिर्च 151 पूरी 152 बेर 153 कटहल 154 नारियल 155 चूना 156 अण्डा 157 अण्डा 158 लाल मिर्च 159 चूसा हुआ गन्ना 160 प्याज 161 गेहूॅ 162 खीरा 163 अडा 164 लाल मसूर की दाल 165 नारियल 166 रस भरी 167 जामुन 168 शरीफा 169 छाता 170 ढोलक 171 छतरी 172 कैची 173 पतग 174 कैरमबोर्ड 175 कघा 176 मोमबत्ती 177 घडी की सुइयॉ 178 चादर 179 सुरमा 180 पतग 181 बल्ब 182 दीपक 183 बल्ब 184 घडी 185 काजल 186 दीपक 187 घडी 188 जूता 189 तबले 190 छाता 191 जूता 192 दीया 193 चश्मा 194 लाठी

195 चश्मा 196 घडी 197 मच्छरदानी 198 चारपाई 199 चश्मा 200 घटा 201 उस्तरा 202 सिक्का (रुपया) 203 लोटा 204 छतरी 205 ढोलक 206 पट करन वाला ब्रुश 207 अखबार 208 साइकिल 209 काजल 210 ताला 211 तबले 212 ढोलक 213 कपडा 214 जूता 215 जूता 216 बटन 217 साइकिल 218 राखी 219 दीया 220 ढोलक 221 रेडियो 222 सुई 223 टेलीविजन 224 सुराही 225 दीपक की बत्ती 226 चश्मा 227 माला 228 सिगरेट 229 नाक 230 दोनो हाथ 231 ऑखे 232 ऑखे 233 ऑखे 234 ऑखे 235 कान 236 ऑख 237 ऑख 238 पैर, हाथ, अगुलियॉ 239 नजर 240 भौ 241 दॉत, जीभ 242 ऑखे 243 दॉत 244 दॉत 245 नाक 246 ऑखे 247 मोर 248 मक्खी 249 काटर 250 वानर 251 जुगनू 252 कौआ 253 तोता 254 सारस 255 सॉप 256 सियार 257 तितली 258 भौरा 259 मछली 260 हाथी 261 बगुला 262 तोता 263 मकडी 264 चिम्पाजी 265 मच्छर 266 तोता 267 जिराफ 268 साप 269 मधु-मक्खियॉ 270 गैडा 271 दरियाई घोडा 272 छिपकली 273 तीतर 274 मच्छर 275 तोता 276 कोयल 277 खरगोश 278 अजगर 279 जुगनू 280 सॉप की कचुली 281 चीटी 282 मछली 283 कछुआ 284 कोयल 285 मच्छर 286 उल्लू 287 चमगादड 288 गाय के थन 289 मेढक 290 दीमक 291 तोता 292 विद्या 293 पेन्ट का ब्रुश 294 कहानी 295 विद्या 296 स्याही की दवात 297 पेसिल 298 पुस्तक 299 पेन/कलम 300 पेन 301 कागज 302 ब्लेक बोर्ड 303 अध्यापक 304 पसिल 305 मानचित्र (नक्शे) 306 ग्लोब 307 कलम 308 कलम 309 पेन 310 शब्द 311 पुस्तक 312 पेन 313 भारत 314 तिरगा झण्डा 315 जयपुर 316 थाईलेण्ड 317 लव-कुश 318 शकुन्तला 319 हर्ष 320 श्रवणकुमार 321 ऋग्वेद 322 दशद्वार से सोपान तक 323 ग्यारह वर्ष के बारह महीनो म तीस अर्थात एक माह घटाइये 324 रतौधी 325 महमूद गजनवी 326 कन्धे पर माता-पिता को लिये श्रवण कुमार 327 मुल्तान का राजा, आनन्द पाल 328 शाहजहॉ 329 चन्द्रशेखर आजाद 330 महाराणा प्रताप 331 चन्द्रशेखर आजाद 332 रानी लक्ष्मीबाई 333 पन्ना धाय 334 महाराणा प्रताप 335 पानीपत 336 खान अब्दुल गफ्फार खॉं 337 सुभाष चन्द्र बोस 338 पन्ना धाय 339 लाला लाजपतराय 340 सीताहरण 341 महात्मा गाधी 342 रेडियम 343 मारकोनी 344 रदरफोर्ड 345 दामोदर नदी 346 जवाहर लाल नेहरू 347 गणेश जी 348 इन्दिरा गाधी 349 'र' अक्षर 350 जलज 351 लाठी 352 नाई 353 पतग 354 टेलीग्राम (तार) 355 छुई-मुई 356 गुब्बारे 357 हीरा 358 पतग 359 नीलम 360 चश्मा 361 आराम 362 रेलगाडी 363 पतग डोर 364 बया का घोसला 365 तकली

366 जूता 367 कानन 368 डगर 369 फव्वारा 370 चरखा 371 पत्र 372 नाव 373 कनक 374 परिश्रम 375 दो पल्ला वाला दरवाजा 376 कुँआ 377 जहाज 378 कसम 379 कपास 380 लेटर बाक्स 381 हुक्का 382 पतग 383 रेलगाडी 384 कुम्हार का डोरा 385 भवन 386 चिट्ठी 387 लट्टू 388 'द' अक्षर 389 लट्टू 390 न्यायाधीश 391 जागी 392 डगर 393 रविवार 394 हवाई जहाज 395 केरमबाड 396 आराम 397 हवाई जहाज 398 मोटर बोट 399 नीरज 400 शीतल 401 मकान 402 हुक्का 403 भट्टा व ईंटे 404 दीप शिखा 405 भट्टा व ईंट 406 खाइ 407 रेलगाडी 408 मकान 409 बॉसुरी 410 कदील 411 शतरज 412 कसम 413 नाव 414 ईंट 415 सडक 416 मॉ, बटी, धेवती 417 कसम 418 अनार (आतिशबाजी) 419 चिट्ठी 420 पतग 421 काजल 422 परोपकारी 423 परछाइ 424 पतग 425 चश्मा 426 मेहॅदी 427 मधुमक्खी का छत्ता 428 महॅदी 429 सडक 430 मिट्टी के चूल्हे का पाता 431 ताला 432 तराजू 433 चक्की 434 मच्छरदानी 435 नजर 436 कसम 437 अनार,(आतिशबाजी) 438 गधा 439 कौआ 440 उल्लू 441 गीदड 442 गाय 443 कोयल 444 ऊँट 445 हिरन 446 कबूतर 447 चीटी 448 हाथी 449 मछली 450 शर 451 भालू 452 तितली 453 सॉप 454 तोता 455 गिलहरी 456 बैया 457 खरगोश 458 मोर 459 परछाईं 460 रल 461 छतरी 462 तिपाइ 463 मेढक 464 खरगोश 465 चीटी 466 सुई 467 रजाई 468 सीढी 469 कोयल 470 आम 471 चाद 472 टी वी 473 चप्पल 474 पानी 475 सूरज 476 ताला-चाबी 477 पखा 478 पेन 479 टॉर्च 480 दूरबीन 481 कछुआ 482 छिपकली 483 किताब 484 रबर 485 हवा 486 टेलीफोन 487 दीपक 488 चाकू 489 चारपाई 490 सिघाडा 491 नारियल 492 लीची 493 गन्ना 494 आवला 495 खीरा 496 प्याज 497 पत्तागोभी 498 उपग्रह 499 ओस 500 ईश्वर 501 आम 502 अनार 503 अखबार 504 अण्डा 505 कल 506 कुम्हार की चाक 507 कम्प्यूटर 508 कान 509 क्रोध 510 क्रिकेट 511 छाता 512 सडक 513 जू 514 जीभ 515 जहाज 516 जलेबी 517 तिरगा झण्डा 518 तबला 519 तबला 520 तरबूज 521 तितली 522 चाकू 523 धन 524 कसम 525 नक्शा 526 नारियल 527 नाव 528 पेसिल 529 प्याज 530 पेड-पौधे 531 पेड 532 पतग 533 बादाम 534 बरफ 535 मच्छर 536 भवन 537 भुट्टा 538 मौसम 539 मिर्च 540 मोमबत्ती 541 मेढक 542 मधुमक्खी का छत्ता 543 मच्छर 544 मीठी बोली 545 मिर्च 546 मूछ 547 स्याही 548 साइकिल 549 साइकिल 550 खुशी 551 साहस 552 सुराही 553 आटे का पेडा 554 आरी 555 आखे 556 आकाश 557 अखबार 558 अगूठी

❑